3+

तीन से आठ साल के बच्चों के लिए चुनिन्दा किताबें

एकलव्य का प्रकाशन

3+

तीन से आठ साल के बच्चों के लिए चुनिन्दा किताबें

Teen Se Aatth Saal Ke Bachchon Ke Liye Chuninda Kitabein

आकल्पन व समन्वयः अंजलि नरोना

चयन व समीक्षाएँः अरविन्द जैन, चन्द्रप्रकाश कड़ा, वीणा भाटिया

परामर्शः तेजी ग्रोवर, डॉ. श्रीप्रसाद

पहला संस्करणः अगस्त 2008/1000 प्रतियाँ

70 gsm मेपलिथो और 150 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित

ISBN: 978-81-89976-14-9

मूल्यः 40.00 रुपए

प्रकाशकः **एकलव्य**

ई-10, बी.डी.ए. कॉलोनी शंकर नगर

शिवाजी नगर, भोपाल 462 016 (म.प्र.)

फोनः (0755) 267 1017, 255 1109

फैक्सः (0755) 255 1108

www.eklavya.in

सम्पादकीय: books@eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

मुद्रकः आदर्श प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, भोपाल, फोनः 255 0291

किताबें करती हैं बातें

कहानियाँ बचपन का एक अभिन्न अंग हैं। चाहे वे खुद गढ़कर सुनाई गई हों या पुस्तकों से पढ़कर। ऐसे ही कविता और गीत भी बच्चों की भाषा का एक अहम हिस्सा हैं। और इसी तरह चित्रों की दुनिया है, जो बचपन को रंगों से भर देती है। यह जो हम आपके सामने रख रहे हैं, तीन से आठ साल के बच्चों के लिए चुनी गई किताबों की सूची है। इसमें कहानी व कविता की किताबें और चित्र-पुस्तकें शामिल हैं।

यह सूची क्यों और कैसे बनी? किस तरह की पुस्तकें तीन से आठ साल के बच्चों को अच्छी लगती हैं और क्यों? इन सब सवालों का एक संक्षिप्त जवाब इस भूमिका में देने की कोशिश है।

इन पुस्तकों को हज़ारों पुस्तकों के संग्रह से चुना गया है। चूँकि बच्चों के लिए मज़ेदार पुस्तकें बहुत कम छापी गई हैं, इसलिए इस सूची में बहुत अच्छी किताबों के साथ-साथ ठीक-ठाक किस्म की किताबें भी हैं।

पृष्ठभूमि

एकलव्य बहुत अरसे से बाल साहित्य व शिक्षा से उसके सम्बन्ध पर कार्य करता आ रहा है। इस कार्य के विभिन्न रूप रहे हैं और नए रूप भी विकसित हो रहे हैं। जब हमने 1983 में प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा पर काम शुरू किया तो एक प्रकार से इसका सबसे महत्वपूर्ण भाग भाषा शिक्षण था। तब तक कई महत्वपूर्ण शोध यह मिथक तोड़ चुके थे कि बच्चे अक्षर जोड़-जोड़कर पढ़ना सीखते हैं। पुस्तकों से, कहानियों से कैसे पढ़ना सीखा जा सकता है, इस पर काफी काम और शोध उस ज़माने में शुरू हुआ था। और इसे लेकर कई चर्चाएँ भी हुई थीं। सो हमने इस पर काम शुरू किया। साथ ही, पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हमने विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में कई पुस्तकालय चलाए। पुस्तकालय के अनुभव काफी रोचक और उत्साहवर्धक रहे। यहाँ तक

कि हमारा विश्वास बढ़ा कि हम भोपाल के शहरी क्षेत्र के स्कूलों में पुस्तकालय के माध्यम से एक भाषा कार्यक्रम विकसित कर सकते हैं। गाँवों और गरीब बस्तियों में भी 100 से अधिक छोटे-छोटे पुस्तकालय विकसित किए गए। इनमें से कई पुस्तकालय थोड़े बड़े बच्चों ने खुद चलाए। पिछले सालों में बच्चों को अच्छी पुस्तकें उपलब्ध कराने के उद्देश्य से हमने बाल पुस्तकों के प्रकाशन को भी काफी बढ़ाया है।

पुस्तकें चुनते हुए हमारी आपस में कई चर्चाएँ हुईं, बहसें हुईं। क्या उम्र के हिसाब से पुस्तकों को बाँटना उचित होगा? चुनाव का आधार क्या होना चाहिए? क्या बच्चों की पसन्द की किताब और चित्रों के कुछ खास गुण होते हैं? कुछ लोगों का कहना था कि अच्छी कहानी तो अच्छी कहानी है, उम्र का क्या सवाल है? वह सभी बच्चों को अच्छी लगेगी। चर्चा करते हुए, बाल साहित्य को समझते हुए, यह समझ में आया कि बच्चों के विकास की एक ृंखला है, जिससे उनकी समझ और पसन्द का एक सिलसिला बनता है। पर इसमें विभिन्नता भी है और यह सन्दर्भ से भी प्रभावित होता है। यह भी समझ बनी कि हम उम्र की श्रेणियों को खुला रखें, बन्द नहीं करें। अतः हमने 3+, 8+, 12+ उम्र के बच्चों के लिए पुस्तकों की सूचियाँ बनाने का काम शुरू किया। ये सूचियाँ सम्पूर्ण नहीं हैं। इनमें लगातार नई पुस्तकें जुड़ रही हैं।

सूची बनाते समय यह भी बात हुई कि उस सूची का उपयोग करने वाले माता-पिताओं, शिक्षकों तथा लायब्रेरियनों को न केवल पुस्तकों के नाम चाहिए होंगे वरन् वे उनके बारे में कुछ जानना भी चाहेंगे। इसलिए इस सूची में संक्षिप्त समीक्षाएँ भी हैं। परन्तु साथ ही पुस्तकों के प्रति एक विश्लेषणात्मक नज़रिया विकसित करने की दृष्टि से कुछ विस्तृत समीक्षाएँ भी हैं।

किस उम्र के बच्चे के लिए कौन सी पुस्तक है?

तीन से आठ साल के बच्चों के मनोविज्ञान को अगर हम समझें तो इससे हमें पुस्तकों के चुनाव में मदद मिलती है। इस उम्र के बच्चों को दो उप-समूहों में बाँटा जा सकता है। तीन से पाँच साल और छह से आठ साल। तीन से पाँच साल के बच्चों के मन में अवधारणा विकसित नहीं हुई होती है। इसका मतलब यह है कि वे अभी अपने अनुभवों के

आधार पर सोचते हैं, अमूर्त रूप में नहीं सोच पाते। अनुभवों को जगाने वाली कहानियों से, खासतौर पर जिनमें छोटे बच्चे या जानवरों के बच्चे होते हैं, वे बहुत आकर्षित होते हैं। *मैं भी, लालू और पीलू* ऐसी ही कुछ कहानियाँ हैं, जो इस उम्र के बच्चों को बहुत भाती हैं।

सामान्यीकरण न कर पाने के साथ-साथ इस उम्र के बच्चे द्रव्यों की मात्रा का अनुमान नहीं लगा पाते। यदि किसी चौड़े पात्र में पड़े द्रव्य को एक सँकरे पात्र में डाल दिया जाए, तो वे समझ नहीं पाते कि द्रव्य की मात्रा कम या ज़्यादा नहीं हुई है। इसी तरह वे एक ही वस्तु के कई जगह होने के विरोधाभास को समझ नहीं पाते हैं। एक ही चीज़ में उनका चित्त भी थोड़ी देर के लिए ही लगता है। यह समय दुनिया की नई-नई बातों की खोज करने का भी है।

छह से आठ साल की उम्र में कुछ अवधारणाएँ विकसित होने लगती हैं। इस उम्र में उनकी रिश्तों में दिलचस्पी बढ़ने लगती है। साथ ही वे बहुत कुछ खुद से करना चाहते हैं, पहल करना चाहते हैं। पर उनसे गलतियाँ भी होती हैं, जिनके लिए वे कभी-कभी शर्मिन्दा भी होते हैं। और अक्सर सफल होकर गर्व भी महसूस करते हैं। *बस की सैर, टिलटिल का साहस* वगैरह कुछ ऐसी ही पुस्तकें हैं।

इस उम्र में बच्चों को किसी कार्य के फल के रूप में नतीजे कुछ-कुछ स्पष्ट होने लगते हैं। इसीलिए इस समय उनको सबक सिखाने वाली कई कहानियाँ सुनाई जाती हैं। परन्तु हमने कोशिश की है कि इस तरह की कहानियाँ न चुनें, क्योंकि हमारा मानना है कि सही और गलत की धारणाएँ सन्दर्भों पर निर्भर करती हैं, और वे धीरे-धीरे अपने सन्दर्भ में सीखी जाती हैं। इनको कहानियों के माध्यम से थोपा नहीं जाना चाहिए।

हर बच्चे की अपनी खास पसन्द होती है। परन्तु उम्र व विकास के हिसाब से कुछेक समानताएँ भी नज़र आती हैं। बच्चों के विकास के नज़रिए से उन्हें देखने की एक सीमा यह है कि इससे सम्बन्धित ज़्यादातर शोध विकसित देशों में हुए हैं। या फिर वे विकासशील देशों के शहरी मध्यम वर्ग के बच्चों के बारे में हैं। ग्रामीण या शहरी गरीब बच्चों के परिवेश, विकास व पसन्द के बारे में बहुत कम जानकारी है।

परन्तु बाल साहित्य में इनके सन्दर्भों का समावेश है।

पुस्तकों के प्रकार और उनकी खासियत

इस उम्र के बच्चों के लिए हमने ज़्यादातर चित्र-पुस्तकें ही चुनी हैं। केवल सुनाने वाली कहानियाँ कम हैं। चित्र-पुस्तकें भी कई प्रकार की हैं। ऐसी जिनमें केवल चित्र हैं या जिनमें चित्रों के साथ कम शब्दों में एक कहानी है या जिनमें कहानियाँ नहीं कुछ जानकारियाँ हैं। कुछ पुस्तकें ऐसी भी हैं जिनमें जानकारियाँ हैं, पर उन्हें कहानियों की तर्ज़ पर रखने की कोशिश है।

आम की कहानी, कौअे की कहानी और *गुब्बारा* केवल चित्रों में कही गई कुछ रोचक कहानियाँ हैं। इनमें ढूँढ़कर समझने, बातचीत करने और गढ़ने के लिए बहुत कुछ है।

घर और घर, रंग-बिरंगी दुनिया, बारात, चिड़ियाघर की सैर आदि केवल चित्रों में दी गई जानकारी की पुस्तकें हैं। तूलिका द्वारा प्रकाशित *दस* नामक पुस्तक 1 से 10 तक की गिनती की एक बहुत ही अद्‌भुत पुस्तक है। इसमें जानकारी को कहानी के रूप में देने की कोशिश की गई है।

इसके अलावा ढेर सारी चित्र-पुस्तकें हैं जिनमें थोड़े से शब्दों में रोचक कहानियाँ हैं। *मैं भी, लालू और पीलू, छोटा शेर बड़ा शेर, नोरबू के नए जूते, एक दिन, हाथी और कुत्ता, हाथी और भंवरे की दोस्ती, लाल पतंग और लालू, सोनाली का मित्र* इत्यादि ऐसी ही पुस्तकें हैं। *बस, मुन्ना* और *माँ की साड़ी* छोटे बच्चों की ज़िन्दगी से जुड़ी स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित बहुत ही प्यारी छोटी-छोटी पुस्तकें हैं।

चूहे को मिली पेन्सिल, प्रणव की तस्वीर, मेरी दीवार ऐसी कुछ किताबें हैं जिनमें कहानी का मुख्य पात्र चित्र बनाते-बनाते कल्पना की दुनिया में निकल जाता है।

थोड़े बड़े बच्चों के लिए लोक कथाओं का पुनः प्रस्तुतीकरण है या लोक कथाओं पर आधारित कहानियाँ हैं। *बुढ़िया की रोटी, मुफ्त ही मुफ्त, जादुई बरतन* और *मोरपँख पर आँखें कैसी* लोक कथाओं की प्रस्तुतियाँ

हैं। *मोरपंख पर आँखें कैसी* उन लोक कथाओं में से है जो कुदरत में होने वाली घटनाओं के कारण ढूँढ़ने की कोशिश करती हैं। कई लोक कथाओं को लोकशैली में चित्रित किया गया है।

चित्र-पुस्तकों में कहानी और चित्र बराबर का महत्व रखते हैं। उनके बारे में थोड़ी चर्चा उपयोगी होगी।

कहानियों की विषय-वस्तु

इस उम्र के बच्चे जानवरों से बहुत लगाव रखते हैं और खासकर जानवरों के बच्चों से। वे अपने हमउम्र बच्चों की कहानियाँ भी खूब पसन्द करते हैं। जानवरों की कहानियों में कुछ ऐसी हैं जिनमें जानवरों के नाम हैं और वे बोलते भी हैं। और कुछ ऐसी जिनमें उनके बारे में कहानियाँ हैं, पर वे बोलते नहीं, उनके नाम नहीं हैं। पहली तरह की कहानियों में *मैं भी, चूहे को मिली पेन्सिल, बोबक बकरा* और *बुढ़िया की रोटी* ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें जानवर बोलते हैं, भले ही उनके नाम न हों।

बाघ का बच्चा तकदीर, महागिरी और *मेंढक और साँप* जैसी कहानियों में जानवर बोलते नहीं हैं। कुछ लोगों का मानना था कि बोलते हुए जानवर बच्चों को भ्रमित करेंगे। परन्तु अब यह स्थापित हो चुका है कि इन चीज़ों से बच्चों को कोई खास फर्क नहीं पड़ता, बशर्ते कहानी रोचक हो।

कहानी की रोचकता मुख्यतः तीन चीज़ों से बनती है।

- एक चीज़ तो यह है कि कहानी में क्या समस्या या द्वन्द्व है? वह किस तरह से स्थापित किया गया है? इस द्वन्द्व या समस्या का निदान क्या है?
- दूसरी चीज़ है कहानी के मुख्य पात्र और बच्चों से उनके सम्बन्ध बन पाना।
- तीसरी चीज़ है कहानी का एक सूत्र में बँधे रहना और बच्चों के ध्यान की सीमा के अन्दर ही रहना।

लालू और पीलू में एक छोटी-सी समस्या है – लालू का गलती से लाल

मिर्च खा लेना। यह समस्या चौथे पन्ने पर ही स्थापित हो जाती है। अन्त में प्यारा-सा निदान हैः पीलू का अपने भाई को गुड़ देना। छोटी-सी समस्या का प्यारा सा यह निदान और साथ ही पात्रों का चूज़े होना, इस कहानी को लोकप्रिय बना देता है।

मैं भी कहानी में भी पात्र हैं चूज़ा और बत्तख का बच्चा, जिनसे इस उम्र के बच्चे अपने आपको जोड़ पाते हैं। *बाघ का बच्चा तकदीर* जैसी कहानियों में समस्या थोड़ी बाद में स्थापित होती है और जल्दी ही सुलझ भी जाती है।

बच्चों की एक और लोकप्रिय कहानी है *महागिरी* जो चालीस सालों से छप रही है। यह अन्य कहानियों से काफी हटकर है। इस कहानी की उलझन या समस्या बीच कहानी में स्थापित होती है जब महागिरी नामक हाथी गड्ढे में खम्बा गाड़ने से इन्कार कर देता है। हालाँकि महागिरी एक वयस्क हाथी है, कहानी के अन्त में वह एक छोटी बिल्ली को बचाता है। शायद छोटे बच्चे इस छोटे जीव से अपने आपको जोड़कर देखते हैं, इसलिए यह कहानी आज भी छोटे बच्चों में इतनी लोकप्रिय है।

अधिकांश पुस्तकों की विषय-वस्तु शहरी मध्यमवर्गीय परिवारों की वास्तविकताओं से जुड़ी है। बहुत कम पुस्तकें गाँव के परिवेश को दर्शाती हैं। *लाल पतंग और लालू* और *भोर भई* दो ऐसी ही पुस्तकें हैं।

चित्र-कहानी में चित्र

पुस्तकों की इस सूची में चित्रों में बहुत विविधता है। कई पुस्तकों के चित्र वास्तविक शैली में हैं, पर उनमें प्रकृति का बारीक अवलोकन झलकता है। कौआ डाल पर कैसे बैठता है, कैसे मुड़कर देखता है, जब उड़कर ज़मीन पर आता है तब उसका रूप कैसा होता है, यह *सोनाली का मित्र* में जगदीश जोशी के व *कौए की कहानी* में युद्धजीत सेनगुप्ता के चित्र दर्शाते हैं। *महागिरी* में पुलक विश्वास के चित्रों ने वास्तविक शैली में भाव भी उकेरे हैं। भावों को चरम पर लाते हुए जानवरों और इन्सानों के चित्रों में भी विभिन्नता है।

मैं भी, घर और घर, बुढ़िया की रोटी, बारात, रूपा हाथी, दस आदि कहानियाँ इस विभिन्नता को दर्शाती हैं।

कुछ किताबें, जैसे *मुफ्त ही मुफ्त, जादुई बरतन* तमिलनाडु और गुजरात की लोकशैलियों में हैं।

कुछ पुस्तकें छायाचित्रों पर आधारित हैं, जैसे *सागर*। कुछ अन्य कोलाज शैली में चित्रित हैं, जैसे *नन्हे चूज़े की दोस्त, छोटा सा मोटा सा लोटा, रसोईघर, क्या सही क्या गलत* आदि।

इन सभी पुस्तकों के माध्यम से बच्चों के सामने चित्रों का संसार खुलता है, जिससे उनकी चित्रण क्षमता भी बढ़ती है।

बच्चों की कविताएँ

ध्वनियों की लय, ध्वनियों के खेल, चाहे उनका कोई खास मतलब ना भी हो, उनमें छोटे बच्चे खूब मज़ा लेते हैं। जन्म से ही बच्चे किसी न किसी तरह लय का अनुभव करते हैं, चाहे वह थप्पी की लय हो, चाहे झूले की। शायद इसीलिए कहीं न कहीं उनमें तुकबन्दियाँ बनाने, ऊटपटाँग ध्वनियों से खेलने का स्वाभाविक गुण रहता है। यही तो छोटे बच्चों की कविता की जान होते हैं:

अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ में लगा धागा
चोर निकलकर भागा।

या फिर:

अटकन चटकन दही चटाकन
बाबा लाए सात कटोरी
एक कटोरी टूट गई
बाबा की टाँग टूट गई।

कविता "रज्जू और कद्दू" में प्रतिभा नाथ की लय का एक अनोखा अन्दाज़ है। इस तरह के गीत अपने बचपन में किसने नहीं गाए?

लोकशैली के ऐसे ही बालगीतों के दो संग्रह इस सूची में शामिल हैं: *अब्बक दब्बक* और *अक्कड़-बक्कड़*। *महंगू की टाई* और *बतूता का जूता* सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की ऊटपटाँग कविताओं के दो मज़ेदार संग्रह हैं।

हिन्दी में बच्चों की अधिकांश कविताएँ वर्णनात्मक होती हैं। घटनात्मक कविताएँ बहुत कम हैं। ऊटपटाँग कविताएँ जिनमें बच्चों को मज़ा आए, वे भी बहुत कम हैं। निरंकारदेव सेवक की *नन्हे-मुन्ने गीत* में छोटी-छोटी कविताएँ हैं, जो जानवरों पर आधारित हैं। इनमें वर्णन भी है, घटनाएँ भी हैं और लय भी है। एक झलक:

मुरगी माँ घर से निकली
झोला ले बाज़ार चली
बच्चे बोले चें चें चें
अम्मा हम भी साथ चलें।

बतूता का जूता अनोखी और मज़ेदार घटनाओं का काव्य संग्रह है। इन कविताओं में कहीं जूता तूफान में पैर से निकलकर जापान पहुँच जाता है, तो कहीं मच्छर हाथी के कान में घुसकर गाना गाता है। या कहीं बन्दूक पिचकारी बनकर अलग-अलग चीज़ों में उलटे-सीधे रंग भर देती है। इस संग्रह में अँग्रेज़ी की लोकप्रिय कविताओं के अनुवाद भी हैं। "जॉनी जॉनी यस पापा" "रामू-रामू हाँ बापू" बन गई और "बा बा ब्लैक शीप" कविता "बाबा भेड़ कलूटी" बन गई है।

रमेश थानवी की बाल कविताओं का संग्रह अपने आप में अद्‌भुत है। उनके संग्रह में से एक छोटी-सी ऊलजलूल फन्तासी इस तरह है:

बस में बैठे बीस
बाहर निकले तीस
बीस तीस का चक्कर
समझ ना पाया कंडक्टर
सारी बस थी खाली
कंडक्टर था जाली

इसमें लम्बी घटनात्मक कविताएँ भी हैं। जैसे जूँ के कुनबे का लड़की के सिर पर बसना या फिर रेलगाड़ी में नींद ना आना। इन घटनाओं को थानवी ने बहुत ही मज़ेदार ढंग से रखा है। रात के बारे में कविता में रात के अँधेरे में तारों का चित्र एक अनोखे ढंग से खिंचता है।

कविताओं की खासियत यह है कि वे ध्वनि, दृश्य, महक-स्वाद और एहसास की दुनिया आबाद कर देती हैं। प्रायः ध्वनि-प्रधान कविताएँ ज़्यादा मिलती हैं। और कुछ वे जो दृश्य खींचती हैं, जैसे प्रयाग शुक्ल के संग्रह *होली* की कविता "गिलहरी"।

बिल्ली बोले म्याऊँ में विभिन्न तरह की कविताएँ हैं। कविताएँ जो तस्वीर खींचती हैं, जैसे "नाना-नानी", "फुग्गा", आदि। कविताएँ जिन्हें आगे बढ़ा सकते हैं, जैसे "क्या-क्या होता गोल", या "लम्बा क्या-क्या"। या फिर खाने की कविताएँ, जैसे "बन्दर मामा" या "जामुन"।
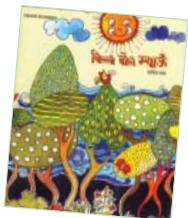
और अन्त में यह कि अधिकांश बच्चों की कविताओं में जो दोहराव रहता है और उनमें जो स्वाभाविक रुचि जगती है, इनके सहारे बच्चे बहुत आसानी से पढ़ना सीख सकते हैं। *दूध-जलेबी जग्गग्गा* ऐसा ही एक कविता संग्रह है।

कुल मिलाकर इस उम्र के लिए उपलब्ध बाल साहित्य में चित्र-पुस्तकें, लोक कथाएँ और कविताएँ हैं, जो बच्चों में पढ़ने की ललक पैदा करती हैं। उनमें इस छोटी-सी उम्र में पढ़ना सीखने की चाह जगाती हैं। इससे पढ़ना सीख पाने की मेहनत आधी हो जाती है।

चाहे आप पालक हों या शिक्षक, इस सूची की पचास पुस्तकों से अपना पुस्तकालय शुरू कीजिए। इस किताब में पुस्तकों के प्रकाशकों के पते पीछे दिए हैं। ये पुस्तकें आप एकलव्य के पिटारा से भी मँगवा सकते हैं।

– अंजलि नरोना

लघु-समीक्षाएँ

1. मेरा परिवार
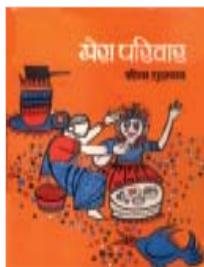
- लेखक - शीला गुज़राल
- चित्रकार - वनीता सिंह
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 20
- मूल्य - 8 रुपए
- प्रकाशक - आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

मध्यमवर्गीय/सम्भ्रान्त परिवार के सदस्यों – अम्मा, बाबा, भैया, दीदी आदि के बारे में एक मज़ेदार कविता संग्रह। कविताओं में लय है और वे आम रिश्तों की कोई खास बात पकड़ती हैं। इसलिए ये कविताएँ आम कविताओं से अलग हैं जिनमें हर विषय का एक सामान्यीकृत विवरण होता है। कविताओं में नटखटपन भी है, जैसे जब भैया टॉफी लाते हैं:

> अम्मा बोले "बाँट कर लो,
> मुन्नी को भी आधी दो",
> मैं आधी झट से खा लेता,
> फिर मुन्नी को हिस्सा देता।

चित्र भी अलग ढंग के हैं, पर मज़ेदार हैं। कई चेहरे खाली हैं। इनमें बच्चे अपनी कल्पना से चेहरा और भाव बना सकते हैं। लेकिन "दीदी" कविता में दूसरा और तीसरा छन्द आपस में बदल गए हैं। यानी तीसरा छन्द पहले छप गया है और दूसरा बाद में।

2. बिल्लियों की बारात (द्विभाषी संस्करण)

- लेखक/चित्रकार - वैंडा गैग
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - अरविन्द गुप्ता
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ संख्या - 21
- मूल्य - 12 रुपए
- प्रकाशक - भारत ज्ञान विज्ञान समिति, नई दिल्ली

एक बूढ़े और बुढ़िया ने चाहा कि वे एक बिल्ली पालें। बूढ़ा बिल्ली ढूँढ़ने निकला तो उसे हज़ारों-लाखों बिल्लियाँ मिलीं। उसने एक सुन्दर-सी बिल्ली चुनना चाहा पर उसे सभी बिल्लियाँ सुन्दर नज़र आईं। वह सभी को घर ले आया। क्या वे सभी बिल्लियों को पाल पाए?

बिल्लियों की बारात वैंडा गैग की प्रसिद्ध पुस्तक *Millions of Cats* का हिन्दी अनुवाद है। साथ में मूल अँग्रेज़ी के चित्र (वुडकट्स) हैं जो अद्भुत हैं। पिछले पचहत्तर सालों में इस पुस्तक के अँग्रेज़ी में पचासों संस्करण निकल चुके हैं। हिन्दी में यह अनूठी कृति पहली बार छपी है।

3. दानी पेड़

- लेखक - शेल सिल्वरस्टीन
- चित्रांकन - दुलारी (शेल सिल्वरस्टीन के मूल चित्रों पर आधारित)
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - अरविन्द गुप्ता
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ - 25
- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - भारत ज्ञान विज्ञान समिति, नई दिल्ली

यह एक लड़के और एक पेड़ की दोस्ती की मार्मिक कहानी है। हर रोज़ लड़का पेड़ के पास आता है, उस पर चढ़ता है, उससे खेलता है। इस सब से पेड़ भी बहुत खुश होता है। धीरे-धीरे लड़का बड़ा हो जाता है। वह अब भी कभी-कभी पेड़ के पास आता है, पर हमेशा उससे कुछ माँगने के लिए। चित्र सरल और सुन्दर हैं। पुस्तक अँग्रेज़ी और हिन्दी, दोनों भाषाओं में है। बच्चों को पढ़कर सुनाने के लिए उपयुक्त है।

4. क्या तुम मेरी माँ हो?

- लेखक - पी. डी. ईस्टमैन
- अनुवाद - अरविन्द गुप्ता
- चित्रांकन - अभय कुमार झा (पी. डी. ईस्टमैन के चित्रों पर आधारित)
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ संख्या - 41
- मूल्य - 12 रुपए
- प्रकाशक - भारत ज्ञान विज्ञान समिति, दिल्ली

चिड़िया का छोटा-सा बच्चा पैदा होते ही अपने घोंसले से गिर जाता है और अपनी माँ की तलाश में निकल पड़ता है। रास्ते में उसे कुत्ता, बिल्ली, मुर्गी, जहाज़, हवाई जहाज़ आदि मिलते हैं जिन्हें वह अपनी माँ समझ बैठता है। वह कैसे यह समझ पाता है कि ये सब उसकी माँ नहीं हैं, इसकी एक मज़ेदार कहानी। चित्र बढ़िया हैं।

5. रेलगाड़ी

- लेखक - हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय
- चित्रांकन - अविनाश देशपाण्डे एवं जेफ फाउलर
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ संख्या - 18
- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - भारत ज्ञान विज्ञान समिति, दिल्ली

इस पुस्तक में हरीन्द्रनाथ के लिखे दो गीत हैं, "रेलगाड़ी" और "नाव चली", जो बच्चों में एक अरसे से लोकप्रिय हैं। गीतों में एक मज़ेदार लय और दोहराव है जिससे छोटे बच्चे पढ़ना आसानी से सीख सकते हैं:

धरमपुर-करमपुर
करमपुर-धरमपुर
मांडवा-खांडवा
खांडवा-मांडवा।

या फिर:

नाव चली
नानी की नाव चली
नीना की नानी की नाव चली।

6. बोबक बकरा

- लेखक - मनरो लीफ
- रेखांकन - अविनाश देशपाण्डे (मनरो लीफ के मूल चित्रों पर आधारित)
- प्रस्तुति - अरविन्द गुप्ता
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ संख्या - 25
- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - भारत ज्ञान विज्ञान समिति, नई दिल्ली

अपने नेता बकरे के पीछे-पीछे चला बोबक नाम का एक बकरा बवण्डर में फँस जाता है। बवण्डर में से निकलने के बाद बोबक बिना सोचे-समझे दूसरों के पीछे चलने की अपनी आदत पर प्रश्न उठाता है। रेखाचित्र सरल लेकिन अद्‌भुत हैं।

पुस्तक छोटे बच्चों को सुनाने के लिए उपयुक्त है। 7-8 साल के बच्चे इसे स्वयं पढ़ सकते हैं।

7. लुढ़कता पहिया

- लेखक - आशा नेहेमिया
- अनुवाद - महेन्द्र यादव
- चित्रांकन - सुबीर रॉय
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
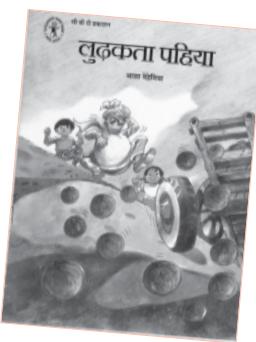
मन को गुदगुदाने और हँसाने वाली एक मज़ेदार कहानी। सरकस देखने जाते वक्त रामू और कमला के ट्रैक्टर का पहिया पहाड़ी के ऊपर पंचर हो जाता है। पंचर बनवाने के लिए पहिया ट्रैक्टर से निकाला जाता है। पर वह अचानक हाथ से छूटकर पहाड़ी से लुढ़क जाता है और कई कारनामे दिखाता है।

कहानी और चित्र मज़ेदार हैं। पर एक समस्या यह है कि कहानी सरकस जैसे अमानवीय आयोजन पर कोई सवाल नहीं उठाती। कहानी सुनाते या पढ़ते वक्त सरकस की समस्याओं पर ज़रूर चर्चा करें।

8. सोनाली का मित्र

- लेखक - अलका शंकर
- चित्रांकन - जगदीश जोशी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 17 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह एक छोटी-सी लड़की सोनाली और एक कौए की दोस्ती की कहानी है जो बिलकुल छोटे बच्चों को बहुत भाएगी। सोनाली का कौए से दोस्ती करना, "का-का" कहना और कौए का बिस्कुट ले जाना, सभी एक आम बच्चे को छू जाने वाली

घटनाएँ हैं। भाषा सरल व रोचक है। जगदीश जोशी के चित्र कहानी को जीवन्त बना देते हैं। पुस्तक 3 से 5 साल के बच्चों के लिए आवश्यक है। बच्चे इससे पढ़ना सीख सकेंगे। पुस्तक पहली और दूसरी के बच्चों को स्वयं पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

9. नन्हे-मुन्ने गीत

- लेखक - निरंकारदेव सेवक
- चित्रांकन - जगदीश जोशी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 22
- मूल्य - 18 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

मुर्गी माँ घर से निकली, झोला ले बाज़ार चली।
बच्चे बोले चें-चें-चें, अम्मा! हम भी साथ चलें।

यह ऐसी ग्यारह छोटी-छोटी कविताओं का संग्रह है जो पिछले पच्चीस सालों से 3 से 5 साल के बच्चों में लोकप्रिय रही हैं। सभी कविताएँ अलग-अलग जानवरों और पक्षियों के बारे में हैं। इन सहज-सरल कविताओं में कुछ ऐसी बात है जो छोटे बच्चों के मन को छू जाती है। जगदीश जोशी के चित्रों ने कविताओं के भावों को खूब उभारा है।

10. दादी की साड़ी

- लेखक - आशा नेहेमिया
- अनुवाद - कुसुमलता सिंह
- चित्रांकन - सुबीर रॉय
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 18 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह कहानी है दादी की अद्भुत साड़ी की जिस पर जंगल के तरह-तरह के चित्र बने हैं। एक दिन दादी की साड़ी को हवा उड़ा ले जाती है। दादी अपनी पोती अनु के साथ साड़ी की तलाश में निकलती है। सुबीर रॉय के चित्र जीवन्त हैं। किताब पढ़कर सुनाने के लिए उपयुक्त है।

11. महागिरी

- लेखक - हेमलता
- अनुवाद - नरेन्द्र शर्मा
- चित्रांकन - पुलक विश्वास
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 15
- मूल्य - 18 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह महागिरी नामक हाथी के विद्रोह की मार्मिक कहानी है। डण्डे से पिटकर भी वह महावत का आदेश नहीं मानता है और लोगों के क्रोध का पात्र बन जाता है। महागिरी ने विद्रोह क्यों किया, यह बात जानकर सभी लोग उस पर मोहित हो जाते हैं।

पिछले चालीस वर्षों से यह पुस्तक छोटे बच्चों में अत्यन्त लोकप्रिय रही है। पुलक विश्वास के चित्र कहानी के मर्म को उभारकर रख देते हैं। हर बच्चे के लिए एक आवश्यक किताब।

12. इन्द्रधनुष और बिंदी

- लेखक - मुक्ता मुंजाल
- अनुवाद - सुभद्रा मालवी
- चित्रांकन - बी. जी. वर्मा
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 15
- मूल्य - 18 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

इन्द्रधनुष पर फिसलती हुई बिंदी नाम की एक परी परीलोक से पृथ्वीलोक पर आती है। यहाँ उसकी मुलाकात गोपी से होती है। गोपी गाएँ पालता है, पर वह अपने लालची सेठ के चंगुल में फँसा हुआ है। लालची सेठ को सबक सिखाने के लिए परी क्या करती है – यही है इस कहानी में। कहानी ठीक ही है। इस उम्र के बच्चों को सुनाने के लिए उपयोगी है। चित्र खास नहीं हैं।

13. बुढ़िया की रोटी

- लेखक - शंकर
- चित्रांकन - सुबीर रॉय
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 23
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

एक कौआ एक बुढ़िया की रोटी ले जाता है। उसे वापस लेने की कोशिश में जन्म लेती है एक परम्परागत लोककथा जिसे प्रस्तुत किया है प्रसिद्ध लेखक शंकर ने। यह सरल और क्रमबद्ध कहानी बच्चों को विशेष पसन्द आती है। कहानी में जो दोहराव है उससे पढ़ना सीखने में मदद मिलती है। इसमें काफी हिंसा भी है। सुनाते या पढ़ते समय ऐसे सवाल ज़रूर कर सकते हैं कि बिना धमकियों के बुढ़िया को रोटी कैसे मिल सकती थी, आदि।

14. चिटकू

- लेखक - सुरेखा पाणांदीकर
- अनुवाद - मनमोहिनी पुरी
- चित्रांकन - मृणाल मित्र
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24

- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

चिटकू नाम का छोटा चूहा माँ की हिदायतों के बावजूद कुछ न कुछ अच्छा खाने की फिराक में लगा रहता है। और हमेशा बाल-बाल बचता है। अन्त में वह बिल्ली से बचेगा या नहीं? मृणाल मित्र के चित्र सजीव हैं। कहानी ज़रा लम्बी है। पढ़कर सुनाने के लिए।

15. पेड़ घूमने चला

- लेखक - दीपा अग्रवाल
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - महेन्द्र यादव
- चित्रांकन - अजंता गुहाठाकुरता
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 15
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

एक छोटा पेड़ जंगल में खड़े-खड़े ऊब गया था और घूमना चाहता था। जब वह घूमने निकला तो उसे कई अजीबोगरीब अनुभव हुए। अजंता गुहाठाकुरता ने चित्रों में जिस तरह भाव उभारे हैं, उससे कहानी और भी रोचक हो जाती है। पढ़कर सुनाने के लिए।

16. गुब्बारे और मैं

- लेखक - नवीन मेनन
- अनुवाद - सुलेखा कुमार
- चित्रांकन - विकी आर्य
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

3+ ◆◆

इस कहानी में एक छोटा-सा लड़का एक लम्बा-सा गुब्बारा खरीदता है और उसके साथ कई खेल खेलता है। चित्र अच्छे हैं। छोटे बच्चों की कल्पनाशीलता को आगे बढ़ाती एक किताब।

17. जा-नू और देखो-ना

- लेखक - थंगम कृष्णन
- अनुवाद - नवीन मेनन
- चित्रांकन - क्षितीज आर. चटर्जी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह जा-नू (जानती नक्को) नाम की सफेद पालतू बिल्ली और देखो-ना (देवगुण खोंके नामुल) नाम के चूहे की दोस्ती और नोक-झोंक की मज़ेदार कहानी है। देखो-ना बार-बार जा-नू को कैसे तंग करता है और कैसे वह उसके कहने में आ जाती है। *टॉम एण्ड जेरी* की याद दिलाती है यह कहानी। चित्र अच्छे हैं। पढ़कर सुनाने के लिए।

18. निराली पोशाक

- लेखक - आशा नेहेमिया
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - कुसुमलता सिंह
- चित्रांकन - पृथ्वीश्वर गायेन
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 15
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

विशालकाय राम, जो नारियल के पेड़ से लम्बा और बरगद के पेड़ से चौड़ा है, तब संकट में पड़ जाता है जब राजकुमारी की शादी के लिए उसे नई पोशाक चाहिए। पर वह किसी तरह अपने लिए एक बेहतरीन नई पोशाक की जुगाड़ कर ही लेता है। पृथ्वीश्वर गायेन के चित्रों ने साधारण और विशालकाय आकार के अनुपात को बखूबी दर्शाया है। पुस्तक पढ़कर सुनाने के लिए ठीक है।

19. हाथी और भंवरे की दोस्ती

- लेखक/चित्रकार - टी. आर. राजेश
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 16 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

एक भँवरा कमल के एक फूल में बन्द हो जाता है। वह आज़ाद कैसे होता है, इसकी चित्र कहानी बनाई है टी. आर. राजेश ने। चित्र बहुत ही सुन्दर हैं। पर अक्षरों का आकार थोड़ा बड़ा होता तो छोटे बच्चों को पढ़ने में आसानी होती।

20. छोटा शेर बड़ा शेर

- लेखक - लोइस हैमिलटन फुलर
- चित्रांकन - अनिल व्यास
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

एक छोटा-सा शावक अपनी माँ के साथ जंगल में रहता है। एक बार वह एक मेंढक का पीछा करते हुए माँ से दूर निकल जाता है तो उसका सामना एक बड़े शेर से होता है। बढ़िया चित्रों वाली एक बहुत ही

रोचक पुस्तक जो कहानी के माध्यम से शेरों के बारे में काफी जानकारी देती है। यह पुस्तक कई संस्करणों में छप चुकी है और बच्चों में लोकप्रिय है।

21. रंग बिरंगे गीत

- लेखक - सावित्री सिंह, प्रतिभा नाथ, दिविक रमेश और अन्य
- चित्रकार - मृणाल मित्र
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 23
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह कुल तेरह कवियों की छब्बीस कविताओं का संकलन है। कई कविताएँ काफी अच्छी हैं। इनमें से कुछ बच्चों में बहुत लोकप्रिय हैं। दिविक रमेश की यह कविता बच्चों की भावनाओं को भली-भाँति प्रतिरूपित करती हैः

नहीं पढ़ूँगा नहीं पढ़ूँगा,
ला दो चाहे ढेर मिठाई,
पहले मुझे बताओ पापा
किसने की थी शुरू पढ़ाई?

मृणाल मित्र के चित्रों में भाव भी हैं और बारीकी भी।

22. पंचतन्त्र की कहानियाँ (भाग 1-4)

- पुनर्कथन - शिवकुमार
- चित्रांकन - पुलक विश्वास, रेबती भूषण एवं देवब्रत मुखर्जी
- साज-सज्जा - द्विरंगी
- पृष्ठ संख्या - क्रमशः 65, 57, 65 एवं 65
- मूल्य - क्रमशः 32, 32, 30 एवं 32 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

पंचतंत्र की कहानियाँ सदियों से पढ़ी और सुनी जाने वाली लोकप्रिय कहानियाँ हैं जो मूलतः संस्कृत में लिखी गई थीं। "पंच" का अर्थ है पाँच और "तंत्र" का अर्थ है आचरण के सिद्धान्त। ये सिद्धान्त हैंः आत्मविश्वास, दृढ़ता, लगन, मैत्री और ज्ञान प्राप्ति। पशु-पक्षियों को केन्द्र में रखकर ये कहानियाँ इन्हीं सिद्धान्तों के महत्व को उभारती या रेखांकित करती हैं। इन अद्भुत कहानियों की शैली सीधी-सादी है और भाषा सरल है। हर कहानी की घटनाएँ आम जीवन के बहुत करीब हैं। इन चारों पुस्तकों में दिए गए चित्र पारम्परिक शैली के हैं, पर अच्छे हैं।

23. इंद्रधनुष पृथ्वी पर उतरा

- लेखक - जूही सिन्हा
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - नवीन मेनन
- चित्रांकन - सुबीर रॉय
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 18 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

आकाश में रहते-रहते सप्तम नामक इन्द्रधनुष ऊब जाता है। दूर से उसे पृथ्वी के पेड़-पौधे, फल-फूल, नदियाँ और पहाड़ अच्छे लगते हैं। इसलिए वह पृथ्वी पर उतर आता है। यह काल्पनिक कहानी छोटे बच्चों को सुनाने के लिए उपयुक्त है। चित्र भी अच्छे हैं।

24. अनोखी प्रदर्शनी

- लेखक - वर्षा सहस्त्रबुद्धे
- मराठी से अनुवाद - शारदा बर्वे
- चित्रांकन - माधुरी पुरन्दरे
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम (कवर बहुरंगी)
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 14 रुपए
- प्रकाशक - एकलव्य, भोपाल

आस-पास कितनी विभिन्न तरह की वस्तुएँ मिलती हैं। बच्चे इन्हें संग्रहित कर सकते हैं और प्रदर्शनी लगा सकते हैं। पुस्तक में बच्चों के स्वाभाविक शौक को कहानी का आधार बनाया गया है। माधुरी पुरन्दरे के चित्र श्वेत-श्याम में होते हुए भी अनोखे हैं। हर पृष्ठ पर बड़े अक्षरों में एक-दो वाक्य हैं। इससे पढ़ना व पढ़ना सीखना आसान हो जाता है।

25. नन्हे चूज़े की दोस्त...

- लेखक - रावेन्द्र कुमार 'रवि'
- कोलाज एवं सज्जा - विप्लव शशि
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ संख्या - 10
- मूल्य - 18 रुपए
- प्रकाशक - एकलव्य, भोपाल
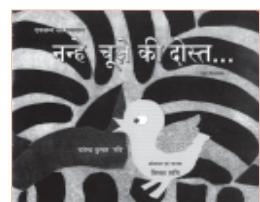
एक बिल्ली की मुलाकात एक चूज़े से होती है तो क्या होता है — दुश्मनी या दोस्ती? चित्र कोलाज शैली में हैं और काफी आकर्षक बन पड़े हैं। पढ़ना शुरू कर चुके 7-8 वर्ष के बच्चों के लिए।

26. बिल्ली बोले म्याऊँ (कविता संग्रह)

- संकलन - प्राशिका समूह, एकलव्य
- चित्रांकन - कैरन हेडॉक, शिवेन्द्र पाण्डिया, पल्लवी

- आवरण - धनंजय
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम (कवर बहुरंगी)
- पृष्ठ संख्या - 36
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - एकलव्य, भोपाल

इस कविता संग्रह में 5 से 7 वर्ष के बच्चों के लिए ध्यान से चुनी गई कविताएँ हैं। भाषा का लुत्फ देने के साथ-साथ इस संग्रह की कविताएँ बच्चों को पढ़ना सिखाने में सहायक होंगी। इन कविताओं में बहुत विभिन्नता है: कुछ ध्वनि-प्रधान कविताएँ हैं, कुछ घटना-प्रधान, और कुछ ऐसी जिनमें दोहराव है। इन्हें बच्चों के साथ कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है इसका तरीका शुरू में “बड़ों से दो बातें” में दिया गया है। ये कविताएँ कक्षा 1 व 2 में भाषा सिखाने के कार्यक्रम के तहत एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह द्वारा चुनी गई हैं।

27. कहानी संग्रह

- संकलन - प्राशिका समूह, एकलव्य
- चित्रांकन - कैरन
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ संख्या - 38
- मूल्य - 22 रुपए
- प्रकाशक - एकलव्य, भोपाल

यह लोमड़ी, मुर्गा, चूहा, मगर, कछुआ, राजा-रानी, लड़के-लड़कियाँ आदि के बारे में छोटी-छोटी कहानियों का संकलन है। कुछ कहानियाँ लोक कथाओं से संकलित की गई हैं, तो कुछ एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा समूह द्वारा लिखी गई हैं। सभी कहानियाँ बच्चों को सुनाने और उन्हें शब्दों से परिचित कराने में मददगार हैं। इनकी भाषा सरल है। चित्र सुन्दर हैं। इनकी बारीकियों में बच्चे कई रोचक चीज़ें ढूँढ़ पाएँगे।

28. बिल्ली के बच्चे

- लेखक/चित्रकार - वी. सुतेयेव
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - एकलव्य, भोपाल
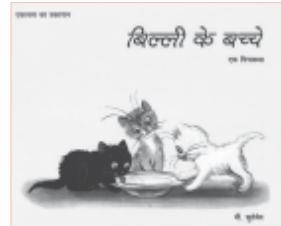
बिल्ली के तीन बच्चे कभी चूहे के पीछे आटे के डिब्बे में कूदकर सफेद हो जाते हैं, तो कभी मछली के पीछे तालाब में कूदकर धुल जाते हैं। ये ऐसी हरकतें हैं जो छोटे बच्चे भी करते हैं। मज़ेदार चित्रों के साथ एक मज़ेदार कहानी। हर पृष्ठ पर एक या दो वाक्य हैं जो पढ़ना सीखने में मदद करते हैं।

29. अक्कड़-बक्कड़

- संकलन - मनोज साहू 'निडर'
- चित्रांकन - प्रीति सलूजा
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम (कवर रंगीन)
- पृष्ठ संख्या - 46
- मूल्य - 15 रुपए
- प्रकाशक - एकलव्य, भोपाल

अक्कड़-बक्कड़ पारम्परिक बाल-गीतों और खेल-गीतों का बढ़िया संकलन है। इसमें संकलित गीत हम सब पीढ़ी-दर-पीढ़ी गाते, गुनगुनाते चले आ रहे हैं। ये बाल गीत भले ही बेतुके और ऊटपटाँग लगें, किन्तु वे आज भी बच्चों की कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकता का नमूना बने हुए हैं।

गीतों की भाषा एकदम बोलचाल की है। चित्रों और गीतों में अच्छा तालमेल है। एक गीत की पंक्तियों से इन बाल-गीतों का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है:

पोशम्पा भई पोशम्पा,
डाकुओं ने क्या किया
सौ रुपये की घड़ी चुराई।
अब तो जेल में जाना पड़ेगा,
जेल की रोटी खाना पड़ेगा।

30. चूहे को मिली पेंसिल

- लेखक/चित्रकार - वी. सुतेयेव
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 12
- मूल्य - 15 रुपए
- प्रकाशक - एकलव्य, भोपाल

एक चूहे को एक पेंसिल मिल जाती है और वह उसे कुतरना चाहता है। पेंसिल थोड़ी मोहलत माँगकर एक आखिरी चित्र बनाना चाहती है। उसी चित्र की कहानी है यह। एक मज़ेदार चित्र-कहानी जिसे बच्चे आसानी से समझ सकेंगे।

31. नाव चली

- लेखक/चित्रकार - वी. सुतेयेव
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 12
- मूल्य - 15 रुपए
- प्रकाशक - एकलव्य, भोपाल

एक मेंढक, चूहा, चूज़ा, चींटी और गुबरैला सैर करने निकलते हैं। रास्ते में उन्हें एक झील मिलती है। मेंढक झील में कूदकर तैरने लगता है, पर बाकी चारों कैसे तैरें? इसी की मज़ेदार चित्र-कहानी है। पढ़ना सीख रहे छोटे बच्चों को यदि यह एक-दो बार ऊँगली रख-रखकर पढ़कर सुनाएँ तो वे इसे खुद पढ़ने की कोशिश करेंगे।

32. चिड़िया और कौआ

- लेखक - मंजू सी. जोमराज
- चित्रांकन - एम. ए. जोमराज
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 14
- मूल्य - 25 रुपए
- प्रकाशक - किताबघर, नई दिल्ली

कौआ चिड़िया के घोंसले में शरण लेता है और फिर उसके बच्चों को खाना चाहता है। क्या वह ऐसा कर पाता है? एक लोककथा का प्रस्तुतीकरण बच्चों को सुनाने के लिए। कुछ चित्र बहुत ही सुन्दर हैं।

33. चुनमुन और गोपा

- लेखक - तनु मलकोटिया
- चित्रकार - एम. ए. जोमराज
- साज-सज्जा - द्विरंगी
- पृष्ठ संख्या - 17
- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - किताबघर, नई दिल्ली

चुनमुन और गोपा दो बहनें हैं। जब माँ और दादी उन्हें घर पर छोड़ जाती हैं, तो छोटी बहन गोपा को खेल खिलाते और बहलाते चुनमुन लगभग थक जाती है। छोटे बच्चों की ज़िन्दगी से जुड़ी इस कहानी का रोचक अन्त होता है। कहानी कविता के रूप में लिखी गई है। चित्र बहुत अच्छे नहीं हैं। यह पुस्तक छोटे बच्चों को पढ़कर सुनाने के लिए है।

34. टिंकू चला नाना के घर

- लेखक - अंजु संदल
- चित्रांकन - एम. ए. जोमराज
- साज-सज्जा - द्विरंगी

- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - किताबघर, नई दिल्ली

टिंकू जब अपने नाना के घर जाने को तैयार होता है तो उसके दादा, दादी, चिड़िया, जानवर सब उदास हो जाते हैं। टिंकू उन सबको साथ चलने को कहता है। लय में लिखी गई इस बढ़िया कहानी में काफी दोहराव है और बच्चों को मज़ेदार लगने वाली घटनाएँ भी। चित्र कुछ अच्छे हैं, कुछ नहीं। कहानी छोटे बच्चों को सुनाने के लिए है।

35. एक थी चिड़िया

- लेखक - मस्तराम कपूर
- चित्रांकन - एम. ए. जोमराज
- साज-सज्जा - द्विरंगी
- पृष्ठ संख्या - 18
- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - किताबघर, नई दिल्ली

इस पुस्तक में चिड़ियों के जीवन-चक्र पर आधारित एक कहानी है। इसमें एक नन्ही चिड़िया घोंसला बनाने, अण्डे देने, बच्चे सेने, उन्हें उड़ने की तरकीब सिखाने की खूब कोशिश करती है।

एक छोटी लड़की की दृष्टि से वर्णित कहानी ठीक-ठीक है। आपको पढ़कर कहानी के भीतर की और भी घटनाएँ पता चलेंगी।

3^+ ◆◆
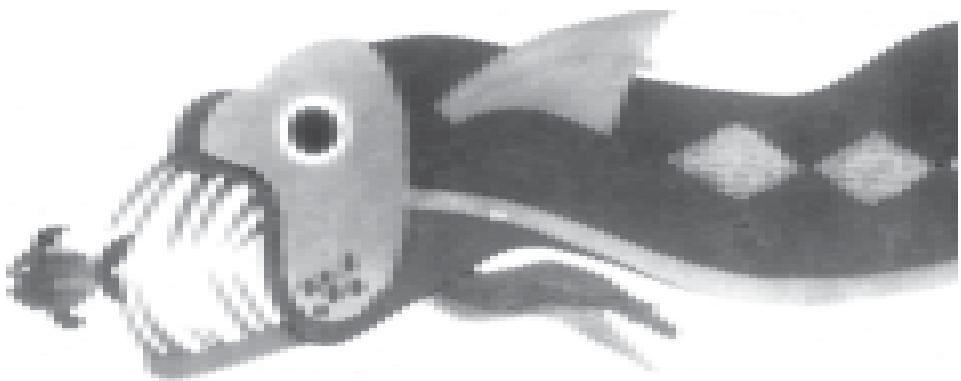
36. मत्स्या

- लेखक - शांता रामेश्वर राव
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - रमेश बक्षी
- चित्रांकन - सिगरून श्रीवास्तव
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 17 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
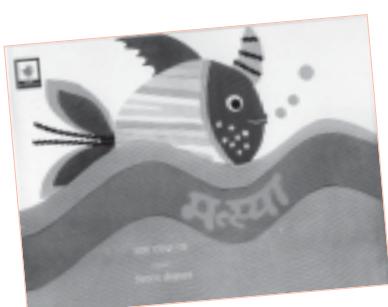
समुद्र की एक नन्ही-सी मछली मत्स्या को बड़ी मछलियों से बचाकर मनु नाम का मछुआरा अपने घर ले जाता है। मनु और उसका परिवार पहले उसे एक घड़े में रखते हैं। फिर जैसे-जैसे वह बड़ी होती है तो उसे एक पोखर, फिर एक झील और अन्ततः एक नदी में पहुँचा दिया जाता है। पर मत्स्या और मनु की कहानी यहीं खत्म नहीं होती। पूरी कहानी को शान्ता रामेश्वर राव ने बड़े सुन्दर ढंग से पेश किया है। रमेश बक्षी का अनुवाद सरल और सहज है। सिगरून श्रीवास्तव के रोमानी शैली के चित्र कहानी को एक विस्तृत आयाम देते हैं। छोटे बच्चों को सुनाने के लिए एक रोचक पुस्तक।
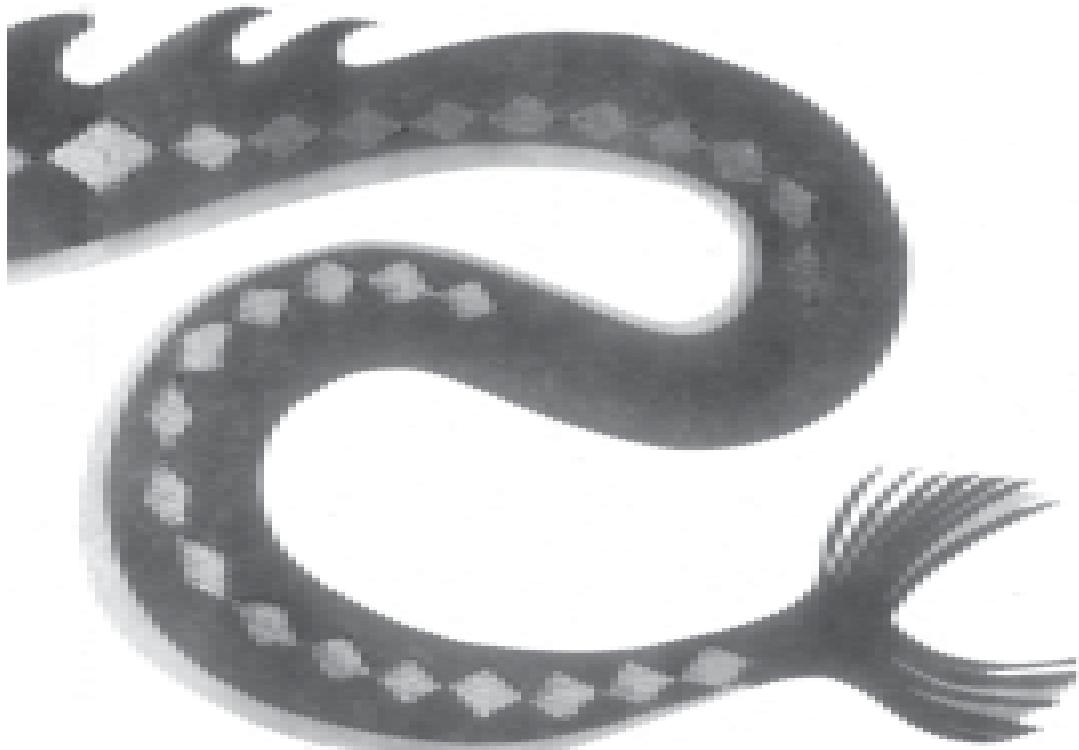
37. रूपा हाथी

- लेखक/चित्रकार - मिकी पटेल
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 32
- मूल्य - 14 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

चिड़ियाघर के भूरे-सलेटी रंग के हाथी रूपा को अचानक एक दिन अपने रंग और आकार पर रंज आ जाता है। उसकी दोस्त चिंची चिड़िया उसे रंग-बिरंगा बनाने का उपाय करती है और शेर की धारियाँ, तेंदुए के बूटे, तोते का हरापन और चिड़ियाघर के अन्य जानवरों से रंग उधार लेकर रूपा को सजाती है। पर क्या वे बच्चे जो रूपा के दोस्त हैं और जिन्हें उस पर रविवार की सवारी करने का इन्तज़ार रहता है, इस रंग-

बिरंगे हाथी को पसन्द करेंगे? जानने के लिए पढ़ना होगा इस सुन्दर पुस्तक को।

मिकी पटेल के अद्भुत चित्रों ने इस कहानी में जान डाल दी है। यह पुस्तक श्रेष्ठ बाल पुस्तकों में से एक है।

38. पशु-पक्षी का नाम बताएं

- लेखक/चित्रकार - निरंजन घोषाल
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 11 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
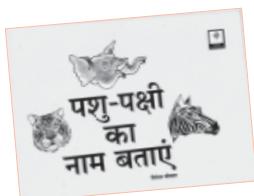
यदि सर हाथी का, अगले पाँव तेंदुए के और पिछले पाँव और पूँछ मुर्गे के हों, तो ऐसे जानवर को क्या कहेंगे – "हादुगा" या फिर "हातेमु" या कुछ और! इस पुस्तक के हर पन्ने पर तीन या चार जानवरों के अंगों का मिश्रण करके बने चित्र हैं जिनका नाम ईजाद करने के लिए प्रोत्साहित करती है यह पुस्तक। काल्पनिक और सृजनात्मक चिन्तन को आगे बढ़ाने का एक प्रयास।

39. नन्हे सिंह ने दहाड़ना सीखा

- लेखक - इंदू राणा
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - पृथ्वीराज मोंगा
- चित्रांकन - गुरमीत सिंह
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 18 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह एक सिंह के बच्चे की कहानी है जिसमें पिता सिंह उसे दहाड़ना सिखाने के लिए अलग-अलग जानवरों से आग्रह करता है। पर वे तो अपनी ही बोली जानते हैं और उसे दहाड़ना सिखा नहीं पाते। चित्र सुन्दर व कल्पनाशील हैं, लेकिन कहानी और चित्रों में जानवरों का मानवीकरण कर दिया गया है। जैसे सिखाने के लिए शिक्षक रखना, ब्रश करना, टाई पहनना, आदि।

40. मंगू का लट्टू

- लेखक - कामाक्षी बालसुब्रह्मण्यन्
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - रमेश बक्षी
- चित्रांकन - अमिताभ सेनगुप्ता
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 12 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह मंगू नाम के एक गरीब लड़के की मार्मिक कहानी है जिसके पास अपना एक भी खिलौना नहीं है। उसे एक दिन एक पुराना, धूल खाया लट्टू मिल जाता है। मंगू उसे बड़े प्यार से साफ करता है। पर लट्टू में एक छेद है...। अमिताभ सेनगुप्ता के चित्र कहानी के मर्म को उभार देते हैं। आजकल की बाज़ारी मानसिकता में ताज़ा हवा देने वाली एक सुन्दर कहानी।

41. सूरज और शशी

- लेखक - वर्षा दास
- चित्रांकन - जगदीश जोशी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 13 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

इस कहानी के पात्र हैं दिन, रात, सूरज, शशी, नींद, हवा और एक अजगर। कहानी पारम्परिक लोककथा के रूप में प्रस्तुत की गई है। कहानी में एक अजगर सूरज और शशी को निगल लेता है। दिन और रात उनकी तलाश में निकलते हैं।

भाषा सहज है। कम शब्दों में कही गई यह कहानी ध्यान बाँधे रहती है। जगदीश जोशी के चित्र कहानी को और निखार देते हैं। 5 वर्ष तक के बच्चों को सुनकर और 6 से 10 वर्ष के बच्चों को पढ़कर मज़ा आएगा।

42. मीता और उसके जादुई जूते

- लेखक/चित्रकार - बी. जी. गुज्जरय्या
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - रमेश बक्षी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 9 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

मीता को जब एक दिन उड़ने वाले जादुई जूते मिलते हैं तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। वह इन जूतों से उड़ सकती है। पर उसके दोस्त उससे जलने लगते हैं। वह अपने दोस्तों को वापस पाती है कि

नहीं, यह तो कहानी पढ़कर ही पता चलेगा।

यह एक ऐसी कहानी है जिसमें कल्पना की उड़ान भरने की काफी गुंजाइश है। लेकिन चित्र कृत्रिम से लगते हैं, खासतौर पर पात्रों के चेहरे।

43. मेरी बहन नेहा

- लेखक - मधु बी. जोशी
- चित्रांकन - पार्थ सेनगुप्ता
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 9 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

जब एक छोटी लड़की के परिवार में नन्ही बच्ची नेहा का जन्म होता है तो उसकी माँ को अस्पताल में भरती होना पड़ता है। यह बच्चों की उन भावनाओं और जिज्ञासाओं पर आधारित एक कहानी है जो उनके मन में तब जन्मते हैं जब उनका छोटा भाई या बहन पैदा होती है। कहानी और चित्रों से स्पष्ट है कि इसमें एक मध्यमवर्गीय परिवार में एक बच्ची के जन्म का विवरण है। लेकिन उस बच्ची के मन में जो सवाल उत्पन्न होते हैं वे अक्सर 5-7 साल के बच्चे के मन में जन्मते हैं। इनके माध्यम से ऐसी स्थितियों में पड़े बच्चों के साथ एक चर्चा का मौका देती है यह पुस्तक। चित्र ठीक-ठीक ही हैं। भाषा आसान है। इस उम्र के बच्चों के लिए एक साधारण पुस्तक।

44. मैं तुमसे अच्छा हूं

- लेखक एवं चित्रकार - सिगरून श्रीवास्तव
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 14 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

मिकी और उसकी बहन के बीच आपस में होड़ लगी रहती है – यहाँ तक कि गन्दा होने की भी होड़ रहती है। "हाँ, मैं तुमसे ज़्यादा गन्दा हूँ," मिकी कहता है। "मैं नहीं मानती, तुम मुझसे ज़्यादा गन्दे नहीं हो," बहन उसका जवाब देती है।

कहानी में भाई द्वारा बहन को कमतर मानने की लड़कों की आम तौर पर देखी जाने वाली प्रवृत्ति को दर्शाया गया है। पर बहन ने इसे खासी टक्कर दी है। एक अच्छी किताब।

चित्रकार सिगरून श्रीवास्तव ने अपनी खास कोलाज शैली में बच्चों की आम खींचतान और नोक-झोंक को बखूबी कैद किया है।

45. मेंढक और सांप

- लेखक/चित्रकार - गणेश हालूई
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - सुबीर शुक्ल
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 11 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

अद्‌भुत चित्रों में गणेश हालूई ने दो मेंढकों और एक साँप की कहानी रची है। शब्द तो बाद में कहानी कहने के लिए लिखे गए हैं। क्या मेंढक साँप से बच पाएँगे?

शब्दों को यदि छुपा दें तो चित्रों के आधार पर बच्चों द्वारा कहानी कहलवाने का अच्छा मौका देती है यह पुस्तक। कई मोड़ों पर कहानी को रोककर बच्चों से "आगे क्या हुआ होगा?" पूछने के मौके भी हैं।

छोटे बच्चों के लिए एक रोचक और आवश्यक पुस्तक। अक्षरों का आकार थोड़ा बड़ा होता तो अच्छा रहता।
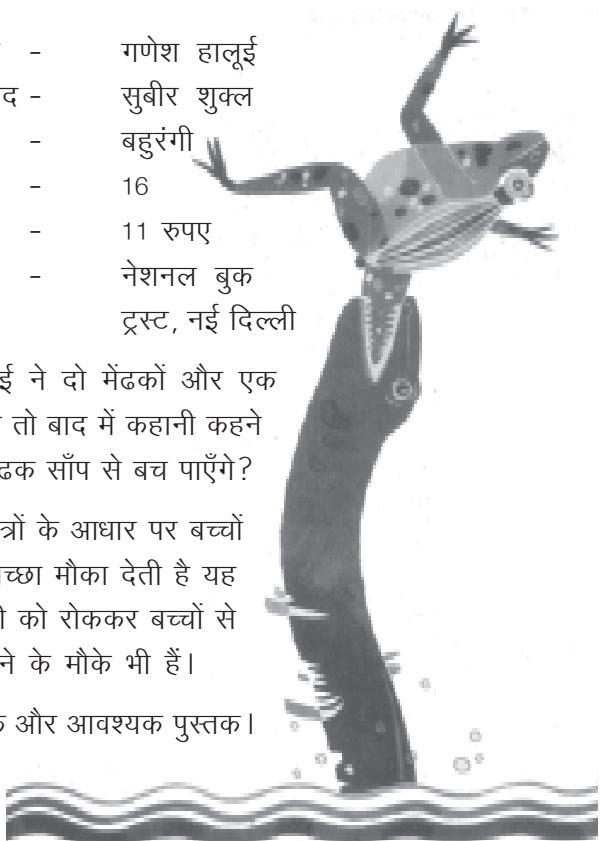
46. खोजो-पहचानो

- चित्रांकन - जगदीश जोशी
- लेखन - मंगलेश डबराल
- साज-सज्जा - द्विरंगी (कवर बहुरंगी)
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 9 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

जंगली व पालतू पशु-पक्षियों को जंगल, खेत-खलिहान और क्यारियों के चित्रों में जगदीश जोशी ने इस तरह छुपा दिया है कि उन्हें ढूँढ़ने में काफी दिमागी कसरत करनी पड़ती है। यह पुस्तक बारीकी से टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों में छिपी आकृतियों को ध्यान से देखने-समझने का अवसर देती है। मंगलेश डबराल की चौपाइयाँ इन्हें ढूँढ़ निकालने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

47. मुनिया ने पाया सोना

- लेखक/चित्रकार - जगदीश जोशी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 10
- मूल्य - 17 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

मुनिया नाम की नन्ही चिड़िया की चेरी कीचड़ में गिर जाती है। बहुत ढूँढ़ने पर भी वह नहीं मिलती है। बाद में उसे एक नहीं कई सुनहरी चेरियाँ मिल जाती हैं। कहानी बढ़िया है, चित्र अद्‌भुत।
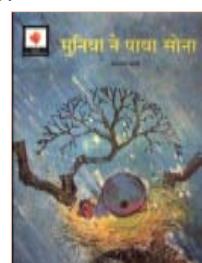
48. शेरा और मिट्ठू

- लेखक - मनोरमा जफा
- चित्रांकन - जगदीश जोशी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 9 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

नन्हे पिल्ले शेरा की नाक पर ततैया काट लेती है। वह अपना दर्द भौंक-भौंककर कईयों को बताने की कोशिश करता है – गाय को, बिल्ली को, मिट्ठू की माँ को भी। उसका दर्द दूर कैसे होता है? जगदीश जोशी के चित्र कहानी को एकदम उभार देते हैं। छोटे बच्चे अपने आप को मिट्ठू के साथ जोड़ पाएँगे। कहानी उन्हें सुनानी होगी।

49. भोर भई

- लेखक - रमेश थानवी
- चित्रांकन - कल्लोल मजूमदार
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 16 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

इस पुस्तक में “भोर भई” नाम की कविता को चित्रित किया गया है। गाँव में दिन की शुरुआत कई बातों से होती है। चूँकि पुस्तकें अक्सर शहरी वातावरण में लिखी जाती हैं, ये सब बातें कविताओं में नहीं आतीं।

कविता ग्रामीण भाषा में ही लिखी गई है। कठिन शब्दों को आखिरी पृष्ठों पर समझाया गया है। चित्र ठीक ही हैं। कविता अच्छी है पर उसकी लय एक जगह टूटती है।

50. चुनमुन आज़ाद है

- लेखक - कमलेश मोहिन्द्रा
- चित्रांकन - आशीष सेनगुप्ता
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 11 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

सुमी और उसकी माँ एक नन्ही-सी ज़ख्मी चिड़िया को उठाकर अपने घर ले आते हैं। सुमी, उसकी माँ और भाई रवि मिलकर चिड़िया की मरहम-पट्टी और देखभाल करते हैं।

कहानी संवेदनशील है। ज़रा लम्बी है, छोटे बच्चों को सुनाने के लिए। चित्र खास नहीं हैं।

51. लाल पतंग और लालू

- चित्रकार एवं लेखक - आशीष सेनगुप्ता
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - सुबीर शुक्ल
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 9.00 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

लालू अपनी भैंस और कुत्ते के साथ जा रहा है कि उसे पेड़ पर अटकी लाल पतंग दिखती है। लालू उसे पाने के लिए क्या-क्या करता है?

कहानी का माहौल ग्रामीण है, और वह मुख्यतया चित्रों के माध्यम से आगे बढ़ती है। लिखे हुए शब्द, जो बहुत कम हैं, चित्रों को ही और मुखरित करते हैं। इस तरह इस पुस्तक में चित्रों और शब्दों का सम्बन्ध अनोखा है।

52. आनंदी का इन्द्रधनुष

- लेखक/चित्रकार - अनूप राय
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - पृथ्वीराज मोंगा
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 17 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

आनंदी को रंगीन चित्र बनाना अच्छा लगता है। एक रात वह सपना देखती है कि इन्द्रधनुष नीचे उतर आया है और उसके सातों रंग चमक रहे हैं। वह इन्द्रधनुष के रंग लेकर अपने आसपास के फूलों में भरने लगती है। पुस्तक में नन्हीं बच्ची की कल्पना झलकती है। चित्र और भाषा सरल हैं।

53. सागर

- छायाचित्र - शंकर देशमुख
- लेखन - वर्षा दास
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 8 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
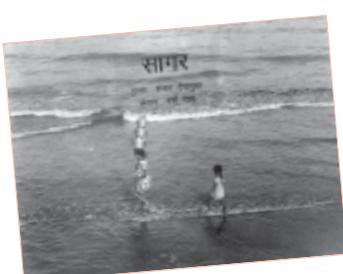
सागर के बारे में छायाचित्रों की एक पुस्तक जिसमें हर चित्र के साथ उसके बारे में दो-तीन वाक्य हैं। छायाचित्रों को समझना कठिन काम है। ऐसे में श्वेत-श्याम चित्रों को समझना और भी मुश्किल हो जाता है। चित्र के साथ लिखे शब्दों से कुछ अन्दाज़ा लगता है कि चित्र में क्या है। यह पुस्तक चित्र और उसके बारे में लिखे हुए को जोड़कर चर्चा करने का मौका देती है।

54. फूल और मैं

- लेखक - मनोरमा जफा
- चित्र - जया रस्तोगी व्हीटन व सुधीर कासलीवाल
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 14 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

संग्रह करना छोटे बच्चों की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। पर किसी चीज़ के संग्रह को व्यवस्थित कर उसे जानकारी का स्रोत बनाना धैर्य का काम है। यह पुस्तक विभिन्न तरह के फूलों को सुखाकर उनका संग्रह करके व्यवस्थित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। फूलों के चित्रों और नामों से परिचित कराती है। अपने आसपास की चीज़ों, खासतौर से फूलों को देखने, समझने, वर्गीकरण कर सँजोने का सबक सिखलाती है। किसी बड़े की सहायता से इस पुस्तक का उपयोग बेहतर होगा।

55. छोटा सा मोटा सा लोटा

- लेखक - सुबीर शुक्ल
- चित्रांकन - मीनू सरीन
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 15 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह एक लोटे, मटके, डोर और मोर की अजीबोगरीब मुलाकात की कहानी है। चित्र बढ़िया हैं और कहानी के भाव अच्छी तरह व्यक्त करते

हैं। शब्दों में दोहराव भी है और लय भी जो छोटे बच्चों को आकर्षित करेंगे और पढ़ना सीखने में मदद भी। ऊटपटाँग कल्पना में बच्चों को मज़ा आता है। यह कहानी ऐसी ही कल्पना को जगाती है।

56. रंगबिरंगी दुनिया

- लेखक/चित्रकार - युद्धजीत सेनगुप्ता
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - पृथ्वीराज मोंगा
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 12
- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

हमारे हर तरफ तरह-तरह के डिज़ाइन नज़र आते हैं। पौधों में, पशु-पक्षियों में। इस पुस्तक में तीसरे आवरण पर बारह पशु-पक्षियों के डिज़ाइन दिए गए हैं। इन्हें पहचानकर अलग-अलग पन्नों पर दिए गए विभिन्न पशु-पक्षियों में भरने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित किया गया है। चित्र बहुत अच्छे नहीं हैं। बाघ, चीते और तेन्दुए में अन्तर करना मुश्किल है। फिर भी गतिविधि पुस्तकें इतनी कम मिलती हैं कि यह पुस्तक एक सकारात्मक अनुभव देती है।

57. गुब्बारा

- लेखक/चित्रकार - दत्तात्रय पाडेकर
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 11 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

राह चलते एक लड़के को एक गुब्बारा मिल जाता है। वह उसे मुँह से फुलाने लगता है। फूलकर गुब्बारा उड़ने लगता है, और साथ में लड़का

भी। केवल चित्रों में है यह कहानी। मज़ेदार और रंगबिरंगे चित्र। छोटे बच्चे खुद कहानी समझकर बोलेंगे। उनका बोला हुआ अगर हर पन्ने पर कोई लिख दे, तो हर बच्चे की अपनी कहानी हो जाएगी।

58. मुत्थू के सपने

- लेखक - कामाक्षी बालसुब्रह्मण्यम्
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - रमेश बक्षी
- पृष्ठ संख्या - 32
- मूल्य - 14 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
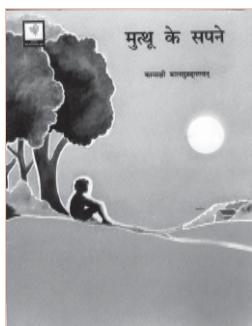
गाँव का एक छोटा-सा लड़का मुत्थु कई सपने देखता है – उड़ने के, समुद्र पार करने के और चाँद पर जाने के। क्या उसके सपने सच हो पाएँगे? सपने देखने और उन्हें पूरा करने की ललक के बारे में एक कहानी। बहुत कम कहानियाँ गाँव के गरीबों को पात्र बनाती हैं। ऐसी ही एक कहानी है *मुत्थू के सपने*। पढ़ना सीख रहे बच्चों के लिए ज़्यादा उपयोगी होती यदि अक्षर थोड़े बड़े होते। चित्र अच्छे हैं।

59. पूंछ

- लेखक - हाइड्रोसे आलुवा
- चित्रांकन - अतनु राय
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 14 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

जानवरों, पक्षियों और मछलियों की पूँछ क्यों होती है और वे उससे क्या करते हैं? यह पुस्तक तरह-तरह की पूँछों के बारे में रोचक जानकारी

देती है। हर पन्ना पूँछ का एक नया काम सामने लाता है। पुस्तक चित्र-प्रधान है। अतनु राय के चित्र जानदार हैं।

60. हम हिन्दुस्तानी

- लेखक/चित्रकार - मेहरू जे. वाडिया
- अनुवाद - रमेश बक्षी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 14 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

"मेरा नाम मीनाक्षी है। मैं तमिलनाडु की रहने वाली हूँ, तमिल मेरी भाषा है। मेरा प्रिय त्यौहार है पोंगल।"

ग्यारह राज्यों के बच्चों को पात्र बनाकर यह किताब विभिन्न राज्यों की संस्कृति का एक हल्का-सा परिचय देती है। जहाँ इससे छोटे बच्चों को भारत की विभिन्न संस्कृतियों का परिचय मिलता है, वहीं एक खतरा भी है: हर राज्य को एक सामान्यीकृत, सम्पन्न, मध्यमवर्गीय चेहरा देने का। इस पुस्तक को विभिन्न राज्यों के बारे में पता करने की शुरुआत के रूप में लें तो बेहतर होगा। बच्चों से चर्चा कर राज्यों के बारे में और जानकारी इकट्ठा कर सकते हैं। चित्र ठीक ही हैं।

61. बारात

- लेखक/चित्रकार - मिकी पटेल
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 11 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह 1 से 10 तक गिनने की एक रोचक चित्र-पुस्तक है। पुस्तक बारात के बैण्ड-बाजे, बत्तियों और सजे-धजे लोगों के माध्यम से 10 तक की संख्याओं का परिचय देती है। पर क्या सभी शादियों में बारात होती है? और होती भी है तो क्या इतनी सजी-धजी? यह किताब इन बातों पर बच्चों से चर्चा करने का मौका देती है।

62. कौवे की कहानी

- लेखक/चित्रकार - युद्धजीत सेनगुप्ता
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 7 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह एक कौवे और उसके बच्चों की चित्र-कहानी है। बच्चों से चित्रों पर बातचीत करके ही यह कहानी तैयार होती है। वॉटर-कलर में बने सुन्दर चित्र बच्चों के लिहाज़ से कुछ अस्पष्ट हैं, पर ढूँढ़ने-पहचानने में मज़ा आता है।

63. क्या सही? क्या गलत?

- लेखक/चित्रकार - सिगरून श्रीवास्तव
- अनुवाद - रमेश बक्षी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 5 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

मिक्की हमेशा गलत को सही कहता है। पर जब उसकी बहन मिन्नी एक अजब चश्मा पहन लेती है तो उसे सब कुछ उलटा-पुलटा दिखाई देता है। मिक्की पापा को दूध पिला रहा है, माँ आरी से ब्रेड काट रही

है ... और क्या-क्या गलत है इस पुस्तक में? क्या सही भी कुछ है? सिगरून श्रीवास्तव के चित्र मज़ेदार हैं। परिवार के छोटे बच्चों के आपसी रिश्तों के बारे में बात करने के लिए एक बढ़िया पुस्तक।

64. आज़ाद करो

- चित्रकार/लेखक - आशीष सेनगुप्ता
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - सुबीर शुक्ल
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 11 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

यह एक चित्र-प्रधान पुस्तक है जिसमें मनु नाम का लड़का कैद जानवरों को मनुष्यों के लिए करतब दिखाते हुए देखता है – सरकस में, सड़क पर, चिड़ियाघर में। वह अपने आपको उनकी जगह रखकर सोचता है। सशक्त चित्रों के माध्यम से यह पुस्तक मनुष्यों द्वारा जानवरों के प्रति व्यवहार पर एक सवालिया निशान लगाती है। अक्षरों का आकार बड़ा होता तो बेहतर होता।

65. आम की कहानी

- आकल्पन/चित्रांकन - देबाशीष देव
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 11 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

दो बच्चे एक पके आम पर गुलेल से निशाना लगाते है। पर क्या वह आम उन्हें मिल पाता है? सिर्फ कल्पनाशील चित्रों में कही गई आम की यात्रा

की मज़ेदार कहानी। हर पन्ना ऐसा है कि आगे क्या हुआ इसका सस्पेंस बना रहता है। बच्चे चित्र देखकर कहानी कह सकते हैं। कहानी एक ऐसे मोड़ पर छोड़ी गई है कि बच्चे विभिन्न तरह से उसे आगे बढ़ा सकते हैं।

66. घर और घर

- चित्रांकन - मैनफ्रेड बौफिंजर, मिकी पटेल, पुलक विश्वास, पी. खेमराज आदि
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 11 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

इस पुस्तक में देश के शीर्ष चित्रकारों ने अलग-अलग जीवों के घरों के मज़ेदार चित्र बच्चों के लिए प्रस्तुत किए हैं। बहुत ही रोचक और ज़रूरी पुस्तक जिस पर खूब चर्चा की जा सकती है।

67. हमारा प्यारा मोर

- चित्र - नीरेन सेनगुप्ता
- लेखन - रमेश बक्षी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 9 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
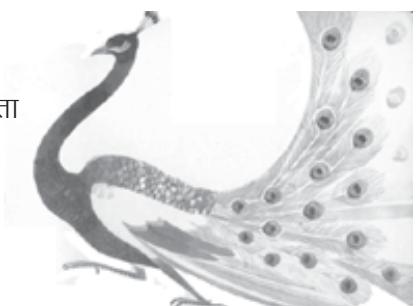
यह चित्र-प्रधान पुस्तक है। इसमें चित्रों और लेखन के माध्यम से मोर के बारे में जानकारी दी गई है। चित्र अच्छे हैं और भाषा सरल है। हर पन्ने पर दो लयात्मक लाइनें हैं, जैसेः

> पंछी उड़ते दूर गगन में
> मोर उड़े पर दूर न जाये।

68. नौ नन्हे पक्षी

- लेखक - एन. टी. राजीव
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 17 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

मुर्गे को अण्डों के पास छोड़कर मुर्गी पानी पीने जाती है। एक के अलावा बाकी सब अण्डे लुढ़ककर टूट जाते हैं। मुर्गा जंगल से विभिन्न पक्षियों के अण्डे लाकर वहाँ रख देता है, ताकि मुर्गी को दुख न लगे। बाद में अण्डों में से बच्चे निकलते हैं। कहानी बहुत ही संवेदनशील धरातल पर चलती है। चित्र खूबसूरत हैं। इस कहानी के माध्यम से बच्चे अलग-अलग पक्षियों के स्वाभाविक व्यवहार और उनकी बोलियों के बारे में भी जान सकेंगे।

69. पतंग के पेंच

- लेखक - उमा बनर्जी
- चित्रांकन - बी. जी. वर्मा
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 15
- मूल्य - 9 रुपए
- प्रकाशक - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

पतंगबाज़ी के लोकप्रिय और परम्परागत खेल की एक आम कहानी जो शाला-पूर्व 3 वर्ष के बच्चों को सुनाने के लिए प्रकाशित की गई है। शब्द बड़े आकार में हैं जो गतिविधियों के लिए उपयोगी हैं। परन्तु पतंग उड़ाते हुए सिर्फ लड़कों को ही दिखाया गया है। कहानी में लड़कियाँ नदारद हैं। इसे चर्चा का मुद्दा बनाया जा सकता है।

70. पानी के उपयोग

- लेखक - राजकुमारी प्रसाद
- चित्रांकन - कुमारी रीनी
- साज-सज्जा - द्विरंगी
- पृष्ठ संख्या - 8
- मूल्य - 5 रुपए
- प्रकाशक - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

इस पुस्तक में पानी के गुणों और उपयोगों के बारे में छोटी-छोटी कविताएँ हैं। ज़्यादातर कविताएँ अच्छी हैं। ये कविताएँ 3 से 5 वर्ष के बच्चों को पढ़ना सीखने में मदद करेंगी। कुमारी रीनी के चित्र सरल और सहज हैं। पुस्तक के अन्त में कुछ पंक्तियाँ पानी के भाप बनने और फिर बरसात होने को समझाती हैं। ये पंक्तियाँ इस उम्र के बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

71. हमारी मदद कौन करेगा?

- लेखक - उमा बनर्जी
- चित्रांकन - रोहिनी पुरंग
- साज-सज्जा - द्विरंगी
- पृष्ठ संख्या - 14
- मूल्य - 8 रुपए
- प्रकाशक - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

डामर या अलकतरा की सड़क बन रही है। गीले डामर में एक चुहिया फँस जाती है। इस तरह इस पुस्तक में एक रोचक कहानी के बहाने सड़क बनने की विधि का भी विवरण है। अक्षर बड़े हैं और चित्र अच्छे हैं। छोटे बच्चों को सुनाने के लिए और हाल ही में पढ़ना सीखे बच्चों के पढ़ने के लिए।

72. रसोई घर

- लेखक - मधु पंत
- चित्रांकन - पूनम बेवली
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 12
- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

यह पुस्तक छोटे बच्चों को रसोई के बरतनों के बारे में लय भरे वाक्यों में जानकारी देती है। जैसेः

गोल गोल मैं बनी कढ़ाई,
दोनों कान लिए गोलाई।

चित्र कोलाज शैली में हैं और काफी रोचक हैं। बड़े अक्षर और भाषा की लय बच्चों द्वारा पढ़ना सीखने में मददगार होगी। पूर्व-प्राथमिक शाला के बच्चों के लिए उपयुक्त।

73. भारी कौन

- लेखक - राजेन्द्र कपूर
- चित्रांकन - सुनील माथुर
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 9 रुपए
- प्रकाशक - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

एक कुत्ता अन्य जानवरों के साथ एक लट्ठे पर झूलने का खेल खेलता है। अलग-अलग जानवरों के साथ खेलने से पता चलता है कि कौन कितना भारी है। कहानी और चित्र साधारण हैं।

74. घर की खोज

- लेखक - राजेश श्रीवास्तव
- चित्रांकन - नयन अभिरामा
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 12
- मूल्य - 7 रुपए
- प्रकाशक - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

रामू नाम का एक छोटा-सा लड़का एक नन्हे खरगोश को पकड़ने के लिए उसके पीछे दूर निकल जाता है और अपने घर का रास्ता भूल जाता है। उसे कई पशु-पक्षी मिलते हैं जो उसे घर का रास्ता तो नहीं बता पाते पर उसे अपने घर ज़रूर बुलाते हैं। कहानी के माध्यम से जानवरों के घरों की जानकारी देने का एक प्रयास।

चित्र अच्छे हैं। भाषा सरल है। कम ही पुस्तकों में गाँव का माहौल दर्शाया जाता है – यह उनमें से एक है। बच्चों को पढ़कर सुनाने और उनके साथ चर्चा करने के लिए।

75. सतरंगी गेंद

- लेखक - चम्पा बागा
- चित्रांकन - कमलेश हीरानन्दानी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 9 रुपए
- प्रकाशक - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

विकास और विशाल के पिताजी उनके लिए एक बड़ी-सी सतरंगी गेंद

लाते हैं जो उन्हें काफी पसन्द आती है। वे उसे उछाल-उछालकर खूब खेलते हैं। फिर वे उसे इन्द्रधनुष की ओर फेंकते हैं और गेंद गायब हो जाती है, खो जाती है। क्या इन्द्रधनुष उसे ले गया है?

पुस्तक छोटे बच्चों को पढ़कर सुनाने के लिए उपयुक्त है। भाषा सरल है, चित्र ठीक-ठीक हैं।

76. प्यारे-न्यारे बोल

- लेखक - शेरजंग गर्ग
- चित्रांकन - रीनी
- साज-सज्जा - द्विरंगी
- पृष्ठ संख्या - 8
- मूल्य - 6 रुपए
- प्रकाशन - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भिन्न-भिन्न जानवर कैसे बोलते हैं — इसके बारे में दो-दो पंक्तियों की मज़ेदार कविताएँ। ये कविताएँ पूर्व-प्राथमिक शाला के बच्चों को पढ़ना सीखने में मदद करेंगी। पुस्तक में इनका उपयोग करने के तरीके भी बताए गए हैं। बड़े अक्षर बच्चों को पढ़ने के लिए आकर्षित करते हैं। चित्रों में दो रंगों का अच्छा उपयोग है।

77. टिमी और पेपे

- संकल्पना - मनीषा वेंगुर्लेकर
- चित्रांकन - संतोष पुजारी
- लेखक - माधव चव्हाण
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 10

- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - प्रथम बुक्स, बंगलूर

टिमी के पालतू कुत्ते का नाम पेपे है। वे दोनों आपस में बातें करते हैं। टिमी और पेपे क्या बातें करते होंगे? यह लगभग 4 साल तक के बच्चों के लिए एक उपयोगी पुस्तक है।

78. मेहनत का मंत्र (म्यांमार की लोककथा)

- अँग्रेज़ी रूपान्तरण - ग्रेस्ट्रोक
- हिन्दी अनुवाद - शोभित महाजन
- चित्रांकन - पी. जी. दिनेश
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 15
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - प्रथम बुक्स, बंगलूर
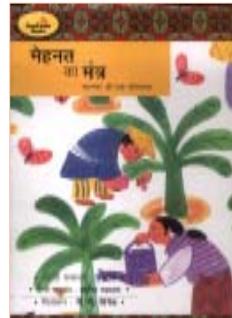
एक गाँव में थेंगी अपनी पत्नी यूज़ा के साथ रहता था। दोनों का जीवन सुखी था किन्तु एक समस्या थी। थेंगी अपना सारा समय मिट्टी से सोना बनाने की विधि ढूँढ़ने में बिताता था। क्या वह इस विधि को ढूँढ़ने में सफल हुआ? यह पुस्तक बच्चों को पढ़कर सुनाने के लिए भी उपयोगी है।

79. सात पूँछों वाली चुहिया

- लेखक - बाप्सी सिधवा
- चित्रांकन - संजय सरकार
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - मनीषा चौधरी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ - 11
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - प्रथम बुक्स, बंगलूर
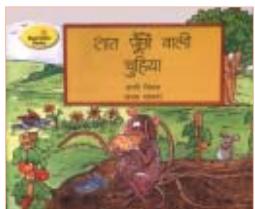
यह एक नन्ही चुहिया की कहानी है जो अपनी सात पूँछों के कारण अन्य चूहों से अलग दिखती है! यह अलग दिखना उसे अच्छा नहीं लगता। इसलिए एक-एक कर वह अपनी पूँछों से छुटकारा पाना चाहती है। चित्र मज़ेदार हैं।

80. चालाक लोमड़ी और समझदार कीरकिंचो (आरजेन्टीना की लोककथा)

- अँग्रेज़ी रूपान्तरण - विद्या मणी
- हिन्दी अनुवाद - शोभित महाजन
- चित्रांकन - ग्रेस्ट्रोक
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ - 16
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशन - प्रथम बुक्स, बंगलूर

लोमड़ी और कीरकिंचो (एक किस्म का जानवर) पक्के दोस्त थे। दोनों दिन भर मौज-मस्ती करते रहते थे। एक दिन कीरकिंचो मेहनत करने की ठान लेता है। परन्तु चालाक लोमड़ी के कुछ और ही इरादे हैं। चित्र सुन्दर और कल्पनाशील हैं। हमारी पुस्तकों में ऐसे चित्र कम ही मिलते हैं। छपाई बहुत अच्छी है।

81. बतूता का जूता

- लेखक - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ संख्या - 26
- मूल्य - 15 रुपए
- प्रकाशक - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

जाने-माने कवि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की लोकप्रिय कविताओं का

संग्रह जिसे एक बार पढ़ने के बाद बार-बार गुनगुनाने की इच्छा होती है। तुकों का मज़ा लेने, पंक्तियों को गाने-चिल्लाने में बच्चों को मज़ा आएगा। ऐसी ऊटपटाँग और मज़ेदार कविताएँ हिन्दी में कम ही मिलती हैं। इसकी वजह शायद यह भी हो कि ये कविताएँ उन्होंने अपने बच्चों के लिए और उनके साथ मिलकर लिखी हैं। कुछ उदाहरणः

> इब्न बतूता पहन के जूता
> निकल पेड़ तूफान में

याः

> 'अ' से आम, 'क' से कलम
> एक गयी खो, एक खा गये हम।

82. महंगू की टाई

- लेखक - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
- साज-सज्जा - द्विरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 20 रुपए
- प्रकाशक - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

यह बच्चों के लिए कविताओं का संकलन है। इन कविताओं में लय है, घटनाएँ हैं, मज़ाक और मज़ा है। द्विरंगी चित्र उतने ही मज़ेदार हैं, पर किसके हैं इसका पुस्तक में ज़िक्र नहीं है। ये कविताएँ छोटे बच्चों को भी भाएँगी और बड़ों को भी।

83. अब्बक-दब्बक

- संकलन - रमेशदत्त दुबे
- चित्रांकन - कमलेश सक्सेना
- साज-सज्जा - द्विरंगी
- पृष्ठ संख्या - 32
- मूल्य - 12 रुपए
- प्रकाशक - रामकृष्ण प्रकाशन, विदिशा (म.प्र.)

पारम्परिक गीतों/कविताओं का संकलन जिसमें बचपन में खेले-गाए गीत हैं जो हम आज तक गुनगुनाते हैं। जैसे “पो संपा भई पो संपा” या फिर “तीतर के दो आगे तीतर/तीतर के दो पीछे तीतर”। कई गीत ऐसे भी हैं जिन्हें हमने पहले शायद कम सुना हो या पढ़ने के बाद वे हमें याद आ जाएँ। जैसे “एक चना, दो देवली/माई सावन आये” या “रात में चन्दा उड़तइ जइयो/दिन में सूरज चलतइ जइयो”। सरल भाषा में लिखे गए इन गीतों में क्षेत्रीय भाषा के शब्दों का बखूबी इस्तेमाल किया गया है। चर्चा की काफी गुंजाइश है। अक्षर बड़े होते तो और अच्छा रहता।

84. लालू और पीलू

- लेखक - विनीता कृष्णा
- चित्रांकन - रेबती भूषण
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 9
- मूल्य - 33.90 रुपए
- प्रकाशक - रत्न सागर, दिल्ली

यह दो चूज़ों की कहानी है। बस पन्द्रह वाक्यों में ही लालू की एक तीखी समस्या और उसका मीठा हल। यह कहानी इतनी लोकप्रिय हुई है कि यह पुस्तक लगभग बीस सालों से हिन्दी और अँग्रेज़ी में लगातार छप रही है। कहानी हिन्दी की कई पाठ्यपुस्तकों के लिए भी चुनी गई है। रेबती भूषण के चित्र बहुत कुछ व्यक्त कर देते हैं।

पढ़ना सीखने-सिखाने के लिए एक ज़रूरी किताब। बच्चे इसे जल्दी ही खुद भी पढ़ सकते हैं।

85. मीनू और पूसी

- लेखक - गिरजारानी अस्थाना
- चित्रांकन - शुद्धसत्व बसु

- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 10
- मूल्य - 33.90 रुपए
- प्रकाशक - रत्न सागर, दिल्ली

मीनू और उसकी नन्ही बिल्ली पूसी की छोटी-सी कहानी। छोटे जानवरों को पालना, उनका गुम हो जाना और फिर मिल जाना – 3 से 7-8 साल के बच्चे ऐसी कहानियाँ बहुत पसन्द करते हैं। इसके अक्षरों का बड़ा आकार और छोटे-छोटे वाक्य बच्चों को खुद पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। "मीनू" और "पूसी" शब्द बार-बार आए हैं, जो शब्द, अक्षर और मात्रा पहचानने में मदद करेंगे। चित्र साधारण हैं।

86. हीरा

- लेखक - मनोरमा जफा
- चित्रांकन - जगदीश जोशी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 14
- मूल्य - 33.90 रुपए
- प्रकाशक - रत्न सागर, दिल्ली

सरकस के एक छोटे हाथी हीरा की कहानी जो जंगल में छूट जाता है। इतने छोटे हाथी का जंगल के खतरों का सामने करने की बात छोटे बच्चों को बहुत भाती है। परन्तु पुस्तक सरकस पर कोई सवाल नहीं उठाती – जो पढ़ते समय माता-पिता या शिक्षक को उठाने चाहिए। जगदीश जोशी के चित्र पुस्तक को और रोचक बना देते हैं।

87. घेरा

- लेखक - मनोरमा जफा
- चित्रकार - मृणाल मित्र
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 14
- मूल्य - 33.90 रुपए
- प्रकाशक - रत्न सागर, दिल्ली
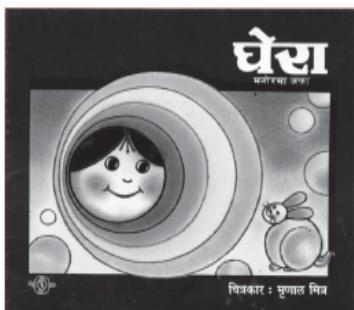
छोटी-सी मोहिनी और उसकी दादी कागज़ पर घेरे या गोले से तरह-तरह की चीज़ें बनाते हैं – गेंद, गुब्बारे और बहुत कुछ। पहले तो मोहिनी दादी जैसा ही बनाती है। फिर उसकी कल्पना को पर लग जाते हैं। घेरे और अन्य आकारों को पहचानने और उनसे खेलने के मौकों की ओर इशारा करने वाली एक सुन्दर किताब।

88. मेज़

- लेखक - मनोरमा जफा
- चित्रांकन - डिज़ाईन स्टूडियो
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 15
- मूल्य - 33.90 रुपए
- प्रकाशक - रत्न सागर, दिल्ली

मेज़ बच्चे के लिए कभी मोटर कार, कभी रेल तो कभी घर बन जाती है। 3 से 5 साल की उम्र है नकल करने की। इसी के बारे में है यह छोटी-सी पुस्तक जिसके आधार पर बच्चों से खूब चर्चाएँ की जा सकती हैं। चित्र बनावटी से लगते हैं, खास अच्छे नहीं हैं।

89. तोता

- लेखक - मुक्ता मुंजाल
- चित्रांकन - मृणाल मित्र
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 10
- मूल्य - 33.90 रुपए
- प्रकाशक - रत्न सागर, दिल्ली

इस पुस्तक में गोपू और नीरा व उनके तोते की कहानी है। हर पन्ने पर एक या दो छोटे-छोटे वाक्य हैं और बड़े आकार के अक्षर हैं। पढ़ने की शुरुआत के लिए एक सरल-सी कहानी। लेकिन इसकी सरलता ही इसकी खासियत है। बच्चे इसे खुद पढ़ सकते हैं। चित्र अच्छे नहीं हैं।

90. खिलते गीत

- लेखक - कई कवि
- चित्रांकन - जगदीश जोशी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 19.90 रुपए
- प्रकाशक - रत्न सागर, दिल्ली

इस संग्रह में कुल अठारह कविताएँ हैं। इनमें से कुछ बहुत अच्छी हैं और कुछ उतनी अच्छी नहीं। एक अच्छी कविता "पेड़ के ऊपर":

पेड़ के ऊपर नीड़ बनाया,
चिड़िया माँ ने सुन्दर।
बच्चे उसके शोर मचायें,
चूँ, चूँ, चूँ, चूँ दिन भर।

नीचे बैठी बिल्ली ताके,
नीड़ है कितना ऊपर।
बच्चों को वह पकड़ न पाये
गुर्राये रह-रह कर।

91. गीत भारती (कविता संकलन)

- संकलन - दिविक रमेश, शशि जैन इत्यादि
- चित्रकार - अरविन्द गुप्ता
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 41.90 रुपए
- प्रकाशक - रत्न सागर, दिल्ली

यह सत्रह कविताओं का एक अच्छा संकलन है – कुछ पारम्परिक कविताएँ हैं और कुछ नई। सभी कविताएँ छोटी हैं और पढ़ना सीखने में मददगार। उदाहरण के लिए पढ़ें दिविक रमेश की कविता "जलेबी":

पापा बोले, आओ बच्चो,
नाच दिखाएगी अब बेबी।
बोली बेबी ठुम्मक, ठुम्मक
पहले ला दो मुझे जलेबी।

एक-आध कविता में भालू का नाच जैसी घटनाएँ हैं जो अब कानूनी अपराध है।

92. होली धूम मचाती आई

- लेखक - प्रयाग शुक्ल
- चित्रांकन - जगदीश जोशी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 21
- मूल्य - 51.90 रुपए
- प्रकाशक - रत्न सागर, दिल्ली

इस पुस्तक में प्रयाग शुक्ल की छोटी-छोटी कविताएँ जगदीश जोशी के चित्रों के साथ प्रस्तुत की गई हैं। अलग-अलग विषयों पर कुल बीस कविताएँ हैं। कविताएँ सरल और लयबद्ध हैं। एक उदाहरणः

हाथी होता साथी अपना
बड़ा मज़ा फिर आता,
सुबह सुबह वह घर आ जाता,
तो मैं उसको कहाँ बिठाता!

छोटे बच्चों के पढ़ने के लिए मज़ेदार।

93. किताबें

- लेखक - सफदर हाशमी
- चित्रांकन - सुरेन्द्रन नायर
- अक्षर लेखन - मनमोहन बावा
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ संख्या - 12
- मूल्य - 15 रुपए
- प्रकाशक - सहमत, नई दिल्ली

किताबों की ओर आकर्षित करती हुई सफदर हाशमी की "किताबें" नामक कविता को पुस्तक का रूप दिया गया है। यह पुस्तक किसी भी उम्र के बच्चों के लिए रुचिकर होगी। शब्द बड़े अक्षरों में हैं। छोटे बच्चों को कविता के हिस्से आसानी से याद हो सकते हैं और फिर कई शब्दों को पहचानकर वे पढ़ना सीख सकते हैं। चित्र अलग शैली के हैं। इन पर चर्चा करके कई चीज़ें ढूँढ़ना काफी रोचक हो सकता है।

94. चम-चम बिजली झम-झम पानी

- लेखक - प्रयाग शुक्ल
- चित्रांकन - जगदीश जोशी
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 14
- मूल्य - 40 रुपए
- प्रकाशक - स्कॉलास्टिक इंडिया, गुड़गाँव

इस पुस्तक में प्रयाग शुक्ल की सोलह नई कविताएँ हैं जो काफी रोचक हैं। कुछ कविताएँ बच्चों को याद हो जाएँगी। कई कविताओं में घटनाएँ हैं, जैसे "गेंद" नाम की इस कविता मेंः

> बब्बू निकले सैर पर,
> गेंद आ गिरी पैर पर,
> ठोकर मार उछाल दी,
> दूर हवा में डाल दी।
> ऊपर ऊपर गयी कहाँ?
> अरे, अरे! अब गिरे कहाँ?

जगदीश जोशी के चित्र कविताओं के अनुरूप हैं। ये कविताएँ बच्चों को पढ़ना सीखने में मदद करेंगी।

95. माँ की साड़ी

- लेखक - अरूणा ठक्कर
- चित्रांकन - रावबेल
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 10
- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - स्कॉलास्टिक इंडिया, गुड़गाँव
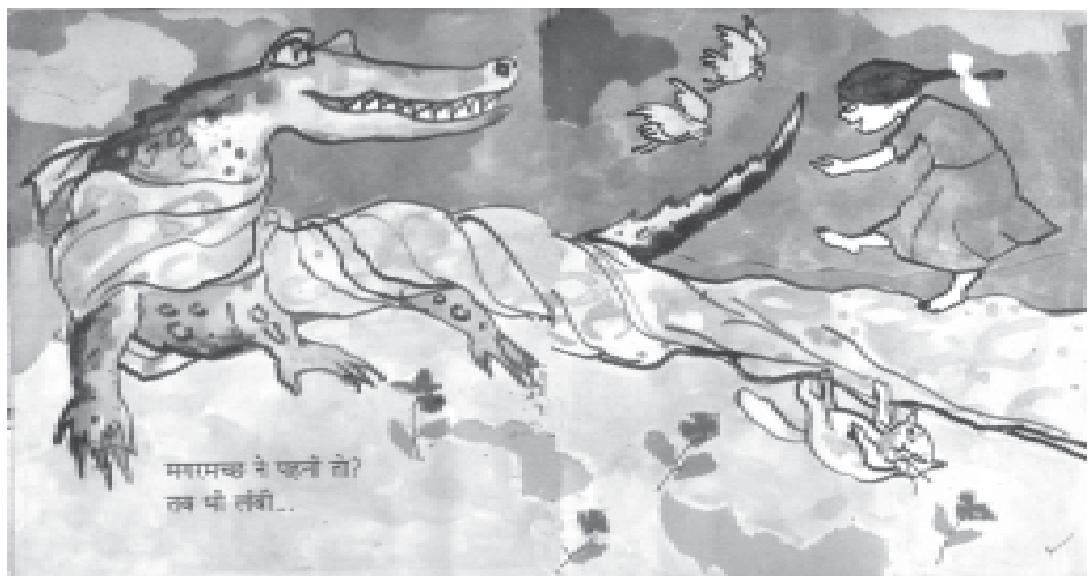
यह कहानी नन्हे बच्चों के मन की उधेड़बुन पर आधारित है। एक बच्ची अपनी माँ की लम्बी साड़ी को देखकर अचरज में पड़ जाती है। छोटी-छोटी बातें जो बच्चों के मन में नई-नई कल्पनाओं को जन्म देती हैं, ऐसी बातों को यह कहानी अपने में समेटे हुए है।

बहुत छोटे बच्चे जो लिखना-पढ़ना शुरू कर रहे हैं, उनके लिए यह एक बढ़िया पुस्तक है। इसमें रंगीन चित्रों और छोटे वाक्यों का अच्छा समावेश है।

96. बस

- लेखक - अरूणा ठक्कर
- चित्रांकन - रावबेल
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 8
- मूल्य - 10 रुपए
- प्रकाशक - स्कॉलास्टिक इंडिया, गुड़गाँव
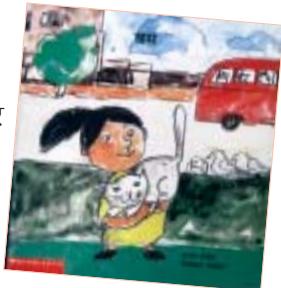
इस पुस्तक में एक छोटी-सी कहानी है। रंगीन चित्रों के साथ छोटे-छोटे वाक्यों की मदद से कहानी आगे बढ़ती है। नन्ही बच्ची बस में सवारी करना चाहती है। परन्तु उसकी बिल्ली साथ में होने से उसे बस में बैठने नहीं दिया जाता। क्या वह बच्ची बस में यात्रा कर पाएगी?

97. बीन बजाती बिल्लो रानी

- लेखक - निरंकारदेव सेवक
- चित्रांकन - अनुपम
- साज-सज्जा - द्विरंगी
- पृष्ठ संख्या - 22
- मूल्य - 15 रुपए
- प्रकाशक - संभावना प्रकाशन, हापुड़

हमेशा की तरह निरंकारदेव सेवक की मज़ेदार कविताएँ। और चित्र बनाए हैं कक्षा 8 की छात्रा अनुपम ने।

98. एक दिन प्रिया का (द्विभाषी संस्करण)

- लेखक - कैथी स्पैगनोली
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - सुषमा अहूजा
- चित्रांकन - रंजन दे व सी. ऐल्बिन
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 32
- मूल्य - 90 रुपए
- प्रकाशक - तुलिका, चेन्नई

प्रिया दिन भर क्या-क्या करती है और एक अखबार का टुकड़ा उसका साथ कैसे देता है, यही है इस किताब में। कहानी दो भाषाओं में है – बाएँ पन्ने पर अँग्रेज़ी में और दाएँ पन्ने पर हिन्दी में। और बीच में हैं अखबार से तरह-तरह की चीज़ें बनाने के निर्देश।
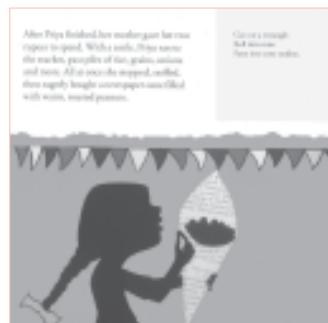
प्रिया के एक दिन का विवरण दूसरे बच्चों को भी अपने दिन का विवरण देने के लिए प्रोत्साहित करेगा। पढ़कर सुनाने और अँग्रेज़ी से परिचय कराने के लिए उपयुक्त। साथ में हैं कागज़ की कई आसान गतिविधियाँ। चित्र अलग शैली के और कल्पनाशील हैं।

99. जादुई बरतन (तमिलनाडु की लोककथा)

- लेखन - वायु नायडू
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - सुषमा अहूजा
- चित्रांकन - मुग्धा शाह
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 20
- मूल्य - 60 रुपए
- प्रकाशक - तुलिका, चेन्नई

यह तमिलनाडु की एक लोककथा है जिसमें फरिश्ते एक गरीब नाटककार मुत्तु की मदद करते हैं। वे उसे एक जादुई बरतन देते हैं। इसे देख रेशम के सौदागर कुप्पुस्वामी का लालच जाग उठता है और वह भी ऐसा ही एक बरतन प्राप्त करने के लिए जंगल में जाता है। वायु नायडु एक कथा वाचक हैं जिन्होंने इस लोककथा को बच्चों के लिए प्रस्तुत किया है। 4 से 8 साल के बच्चों को पढ़कर सुनाने के लिए। मुग्धा शाह के चित्र बच्चों को पसन्द आएँगे। चित्रों की शैली तमिलनाडु की मिट्टी की मूर्तियों जैसी है।

100. मुफ्त ही मुफ्त (गुजरात की लोककथा)

- लेखन - ममता पाण्डया
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - संध्या राव
- चित्रांकन - श्रीविद्या नटराजन
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 20
- मूल्य - 65 रुपए
- प्रकाशक - तुलिका, चेन्नई

गुजरात की इस लोक कथा में कंजूस भीखुभाई नारियल खाना चाहते हैं, और वह भी सस्ते में। इस चक्कर में वे घर से निकलते हैं और नारियल के बगीचे में पहुँच जाते हैं। इस दौरान कई रोचक घटनाएँ घटती हैं। श्रीविद्या नटराजन ने पारम्परिक गरोड़ा चित्रकारों की शैली अपनाई है। चित्रों की रोचक बारीकियों पर बात करने में बच्चों को मज़ा आएगा।

101. मोरपंख पर आँखें कैसी? (राजस्थान की लोककथा)

- लेखन - वायु नायडू
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - सुषमा अहूजा
- चित्रांकन - मुग्धा शाह
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 20
- मूल्य - 60 रुपए
- प्रकाशक - तुलिका, चेन्नई

यह राजस्थान की एक लोक कथा है। इसमें जंगल के जानवर मिलकर मोर को अपना नेता चुन लेते हैं। इसी दौरान सूर्य की बेटी सूर्या उस पर मोहित हो जाती है और उससे शादी कर लेती है। अब तक मोर के पंखों पर आँखों जैसे निशान नहीं थे। ये निशान कैसे बने, इसी के बारे में है यह कथा। मुग्धा शाह ने राजस्थान की फड़ शैली के बढ़िया चित्र बनाए हैं। अन्य लोक कथाओं की तरह छोटे बच्चों को पढ़कर सुनाने के लिए।

102. सुनु-सुनु घोंघा - बगीचे में तूफान

- लेखक - संध्या राव
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - सुषमा
- चित्रांकन - अशोक राजगोपालन
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 22
- मूल्य - 70 रुपए
- प्रकाशक - तुलिका, चेन्नई
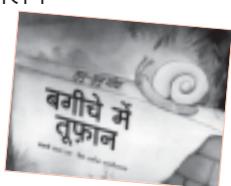
सुनु-सुनु घोंघा अपनी दोस्त चींटियों के साथ खेल रहा है। अचानक ज़ोर से तूफान आ जाता है। सुनु-सुनु कई आवाज़ें सुनता है (शायद इसीलिए उसका नाम सुनु-सुनु पड़ा) और अपनी माँ को बताता है।

छोटे-से घोंघे के परिपेक्ष्य से लिखी और चित्रित की गई एक सरल कहानी जो छोटे बच्चों को पढ़ना सीखने में मदद करेगी। छोटे घोंघे से 3 साल के बच्चे अपनापन महसूस करेंगे। चित्र अच्छे हैं।

103. एक्की-दोक्की (मराठी लोककथा)

- लेखक - संध्या राव
- अँग्रेज़ी से अनुवाद - ब्रजेन्द्र सिंह
- चित्रांकन - रंजन दे
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 65 रुपए
- प्रकाशक - तुलिका, चेन्नई

यह दो बहनों की एक लोककथा है। एक्की या एक केशवाली के सर पर एक बाल है और दोक्की के सर पर दो। परम्परागत लोक कथाओं की तर्ज़ पर एक बहन को बहुत अच्छा और दूसरी को बहुत बुरा दिखाया गया है। फिर ये दोनों अलग-अलग समय पर जंगल में अकेले रहने वाली एक बूढ़ी अम्माँ से मिलती हैं... रंजन दे की अनोखी चित्रकारी ने कहानी को और मनोरंजक बना दिया है।

104. बसवा और आग के बिंदु

- लेखक - राधिका चड्डा
- चित्रांकन - भक्ति फाटक
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 24
- मूल्य - 100 रुपए
- प्रकाशक - तुलिका, चेन्नई

सूखी लकड़ियाँ लेने बसवा रोज़ जंगल में जाता है। एक दिन लकड़ियाँ चुनते-चुनते अँधेरा छा जाता है और बसवा जंगल में छूट जाता है। वह घर कैसे लौटता है? कौन उसकी मदद करता है?

पुस्तक की बनावट तो बढ़िया है ही, इसकी कहानी भी खूबसूरत है। हरेक घटना बच्चों के मन को भीतर तक छुए बगैर नहीं रहेगी। चित्र एकदम अलग ढंग के हैं, जो कहानी को और भी आकर्षक बनाते हैं।

[विस्तृत समीक्षाएँ]

खिलौने वाला घोड़ा

समीक्षाः तेजी ग्रोवर
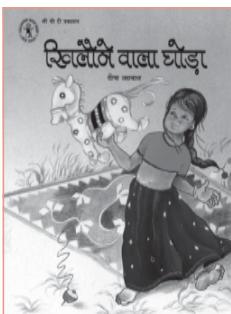
खिलौने वाला घोड़ा अँग्रेज़ी में लिखी गई पुस्तक *द टॉय हॉर्स* का हिन्दी अनुवाद है। "बंजारा जाति" की एक लड़की रामी इस कहानी के केन्द्र में है। उसका परिवार किसी शहर की एक सड़क के किनारे खड़ी अपनी गाड़ी में रहता है। पिता लोहे के औज़ार बनाकर बेचते हैं और मां रंग-बिरंगे घोड़े।

कहानी इस घटना पर केन्द्रित है कि कैसे खिलौने वाले घोड़े के लिए ज़िद करती रामी अपने लिए खुद एक घोड़ा बनाने में सफल हो जाती है, और कैसे वह आखिरकार अपनी ही उम्र की सम्पन्न घर की एक लड़की को अपना घोड़ा दे देती है।

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित एक प्रतियोगिता में यह पुस्तक पुरस्कृत हो चुकी है। इस किताब को इसलिए भी ज़रा गौर से देखने की ज़रूरत है ताकि हम पता लगा सकें कि समकालीन दृश्य पर किस तरह का बाल साहित्य पुरस्कार के योग्य समझा जाता है।

यह बात तो ज़रूर है कि सुश्री दीपा अग्रवाल के कहानी के पात्रों के चुनाव में एक नयापन हमें दिखाई देता है। हिन्दी बाल-साहित्य में बच्चा खुद कहानी के केन्द्र में रहे, ऐसा प्रायः नहीं होता है। दूसरे, मध्यम-वर्गीय परिवार और उनके रहन-सहन के ढंग ही प्रायः बच्चों के लिए लिखी जा रही किताबों में दर्शाए जाते हैं। *खिलौने वाला घोड़ा* के कथानक में कई बाल-सुलभ भाव भी हमें देखने को मिलते हैं – रामी का घोड़े के लिए ज़िद करना, अपना घोड़ा बना लेने पर उससे अलग-अलग खेल खेलना, उसे लेकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करना, अपना घोड़ा बेचने से इन्कार करना, ग्राहक लड़की की रंग-बिरंगी गुड़िया देखकर ललचा जाना इत्यादि।

लेकिन यह कहानी ठीक इन्हीं कारणों से एक गहरी दृष्टि की माँग भी करती है। यह निश्चित ही एक ऐसी पुस्तक हो सकती थी जिससे हमें "ईदगाह" जैसी कहानियों की स्मृति हो आती जिसमें मेले के लिए मिली हुई ज़रा-सी पूँजी से हामिद अपनी दादी के लिए एक चिमटा खरीद लाता है। इस कहानी में इस तरह की सम्भावना भी हो

सकती थी जिससे शहरों में पल रहे मध्यम-वर्गीय बच्चे अपने देश के कुछ विलक्षण लोगों से एक आत्मीय परिचय पा लेते, जिसके लिए उन्हें आम जीवन में कोई खास अवसर नहीं मिलते। लेकिन क्या *खिलौने वाला घोड़ा* में ये सम्भावनाएँ हैं?

कहानी में "बंजारा जाति" के लोग कौन हैं? वे शहरों में अचानक कहाँ से और क्यों चले आते हैं? और जब हम लोग उन्हें सड़क के छोर पर बसा हुआ देखते हैं तो हमारे मन में उन्हें लेकर क्या भाव पैदा होते हैं? अगर कोई लेखक ऐसे पात्रों का चुनाव करता है तो उस पर क्या अतिरिक्त ज़िम्मेदारी आन पड़ती है? वह लेखक अगर अपने से बिलकुल अलग किस्म की जीवन-शैली को लक्षित कर रहा है तो इसके लिए क्या अपने बने-बनाए दृष्टिकोण पर संशय का भाव उसके मन में जागृत होना चाहिए या नहीं?

लेखक की बात अगर न भी करें तो किसी भी ऐसे संवेदनशील व्यक्ति से यह उम्मीद रखना बेमानी नहीं है कि वह अपने शहर में रोज़गार ढूँढ़ने शहरी परिवेश के बाहर से आए लोगों के बारे में कुछ जानने-समझने की कोशिश करे। हम यह नहीं कह रहे कि बच्चों को इन लोगों की पूरी आर्थिक और सामाजिक परिस्थिति समझाने की कोशिश करनी चाहिए। दिक्कत तब पेश आती है जब लेखक भी इन पहलुओं से पूरी तरह बेखबर नज़र आता है और उसके लेखन में यह बेखबरी छिपी हुई नहीं रह पाती। ज़ाहिर है ऐसे लेखक या ऐसी संवेदनशीलता रखने वाले लोग तो विरले ही होते होंगे जो शहरी सुविधाओं (जैसे बिजली, पानी, सड़कें) और ग्रामीण व वन्य क्षेत्रों की बढ़ती हुई विपन्नता में सीधा सम्बन्ध देख पाते हैं।

ऐसे इलाकों के हमें न दिखाई देने वाले कुछ लोग जब हमारे बीच अचानक नमूदार हो जाते हैं तो वे हमें कैसे दिखते हैं? वे लोग जो अपने समूचे दुख को अपने मन में लिए शहर चले आते हैं? वे जिस "समाज" में आते हैं, अपने बचे-खुचे परम्परागत कौशल लेकर, अपना क्षीण होता हुआ सौन्दर्य और स्वाभिमान लेकर, वह "समाज" उनकी सेवाओं का भरपूर लाभ उठाते हुए भी उनके प्रति पूरी तरह उदासीन है। नहीं, उदासीन भी नहीं है – वह उनकी वेश-भूषा, उनके ृंगार और उनके सौन्दर्य का अलग से ग्राहक भी है, उनकी बनाई हुई अन्य चीज़ों के अलावा वे लोग "जातीय" हैं, "रंगीन" हैं, "आदिवासी" हैं और आप उन्हें कहीं भी नचा-दिखा सकते हैं। उनकी बनाई हुई चीज़ें फैशन में हैं। कम लोग ही सोच पाते होंगे कि इस सौन्दर्य का मर्म क्या है, ये "चीज़ें" इतनी आकर्षक कैसे बन जाती होंगी, और कि उन्हें उपभोग की वस्तुओं में बदलकर रख देना, और उन्हें लेकर सौदेबाज़ी करना किस रूप में देखा जाना चाहिए।

यह भी देखना चाहिए कि *खिलौने वाला घोड़ा* में भाषा क्या भूमिका अदा कर रही है।

दीपा अग्रवाल जिस परिवार को "बंजारा जाति" के लोग कह रही हैं वे दरअसल "बंजारा जाति" के लोग नहीं हैं। घुमक्कड़ समुदायों को सामान्य भाषा में बंजारे और खानाबदोश कह दिया जाता है, लेकिन "बंजारा" एक विशिष्ट जनजाति है और परम्परागत रूप से वे लोग लोहे का काम नहीं करते, न ही कपड़े के घोड़े बनाते हैं। लेखिका ने पता लगाने की कोशिश भी नहीं की कि जो लोग उनकी कहानी के केन्द्र में हैं वे कहाँ से आए हैं और कौन लोग हैं; और यह काम लेखक का नहीं तो और किसका है? फिर उन लोगों की गाड़ी पर बने चित्र इत्यादि सुन्दर हैं, रामी की माँ का घाघरा "अशर-पशर" की आवाज़ करता है। लेकिन ये विवरण तभी सार्थक होते अगर वे इस परिवार की अन्य परिस्थितियों के साथ तादात्म्य में होते। अगर ऐसा नहीं होता है तो वेश-भूषा, आभूषण, हस्तशिल्प इत्यादि उपभोग की "विचित्र" चीज़ों में बदलकर रह जाते हैं, और ठीक ऐसा ही इस कहानी में होता है। वह सजी-धजी महिला जो अपनी बेटी के लिए घोड़ा खरीदना चाहती है बिना किसी संकोच के तपाक से बहुवचन में पूछती है — "ये घोड़े कितने के हैं?" जैसे कि वह सारे-के-सारे घोड़े खरीद लेने वाली है।

रामी का बनाया हुआ घोड़ा जो उनकी बेटी को पसन्द आता है उसकी "टाँगें टेढ़ी-मेढ़ी हैं," और "सिर एक ओर को लटका हुआ है।" बच्चे को केन्द्र में रखती हुई यह कहानी घोड़े के इस वर्णन में इतनी वयस्क दृष्टि कैसे रखे हुए है? क्या इस कहानी को पढ़ने वाले बच्चे रामी के घोड़े को इसी दृष्टि से देखेंगे कि वह टेढ़ा-मेढ़ा और लटका हुआ घोड़ा है? खासतौर से तब जब वह घोड़ा खुद एक बच्चे का बनाया हुआ है?

बहरहाल, सन्देश यह है कि घोड़ा चाहे टेढ़ा हो या सीधा, उसे पैसे से खरीदा जा सकता है, एक बच्चे की भावना का निरादर करके भी। माँगी गई कीमत से छह-आठ आने कम दिए जाएँ या ज़्यादा, बात एक ही है। लेकिन बात सिर्फ यहीं खत्म नहीं होती। एक प्लास्टिक की गुड़िया जो ग्राहक बच्ची के हाथ में है रामी को पहली नज़र ही में भा जाती है। और जब वह बच्ची इस गुड़िया के बदले में रामी से यह घोड़ा लेने का प्रस्ताव रखती है तो रामी यह कहकर कि घोड़ा तो वह कभी भी बना सकती है, खुशी-खुशी मान जाती है।

जो घटना बच्चों के बीच एक सहज और प्रसन्न व्यापार के रूप में हमारे सामने आती है, हमें ज़रूर उसकी ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। मसलन कि अगर इस "बंजारा" जगत के लिए लेखिका के मन में सम्मान की कोई भावना होती तो कहानी का अन्त भी यह नहीं होता।

हो सकता है रामी और वह गुड़िया वाली लड़की एक साथ मिलकर एक और घोड़ा

खिलौने वाला घोड़ा

- लेखक - दीपा अग्रवाल
- अनुवाद - कान्ता एस. पाल धवन
- चित्रांकन - अजन्ता गुहाठाकुरता
- साज-सज्जा - बहुरंगी
- पृष्ठ संख्या - 16
- मूल्य - 18 रुपए
- प्रकाशक - चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

बनाने में जुट जातीं। लेकिन यह प्लास्टिक की गुड़िया देकर घोड़ा ले लेने वाली बात उसी व्यापार की ही एक मिसाल है जिसका ज़िक्र हम ऊपर कर आए हैं। और यह मुद्दा इस बात से जुड़ा हुआ भी है कि हम अपने बच्चों के लिए कैसा साहित्य लिख रहे हैं और पुरस्कृत कर रहे हैं।

इस किताब के चित्र भी पहली नज़र में बहुत आकर्षक लग सकते हैं, लेकिन दरअसल ये अपने विषय के साथ बिलकुल भी तादात्म्य में नहीं हैं। अलग-अलग पन्नों पर बनी हुई रामी की माँ, रामी, पिता और गुड़िया वाली लड़की बिलकुल अलग-अलग दिखाई पड़ते हैं — रामी की माँ के नयन-नक्श हर पन्ने पर बिलकुल अलग हैं और इसी तरह बाकी सबके भी। सड़क का किनारा एक अच्छा-खासा टाइलों वाला ड्राइंग-रूम नज़र आता है।

कुल मिलाकर *खिलौने वाला घोड़ा* हमारे लिए एक साथ कई प्रश्न खड़े कर देने वाली कहानी है। और इस किताब को चर्चा के लिए अपने पुस्तकालय में ज़रूर रख लेना चाहिए।

हो सकता है कि यह किताब बच्चों को अच्छी लगे, लेकिन बाल-साहित्य के मर्मज्ञ हमें बताते हैं कि हर ऐसी किताब जो बच्चों को अच्छी लगे, ज़रूरी नहीं कि सही में एक अच्छी किताब हो ही।

दादी ने की बुनाई

समीक्षाः तेजी ग्रोवर

जब भी हम लोग अपनी सुविधा के लिए किसी पुस्तक को "बाल साहित्य" की श्रेणी में रखते हैं, हम दो चीज़ों को नज़रअन्दाज़ कर रहे होते हैं। पहली तो यह कि वह पुस्तक अगर बच्चों के लिए साहित्य है, तो निश्चित ही वह बड़ों के लिए भी "साहित्य" है, यानी इस संसार में मनुष्य के हिस्से में आई सौन्दर्य-दृष्टि, उसका सम्पूर्ण भाव-जगत, सुख और दुःख, प्रेम और ईर्ष्या, अभाव और वैभव, सभी उस साहित्य में दिखते हैं, महसूस होते हैं। वह "पुलक" और उल्लास जो हमें बच्चों की दुनिया में सहज ही हासिल हो जाते हैं, बड़े होने की प्रक्रिया में हममें से कुछ ही लोग उन्हें सँजोकर रखने की सामर्थ्य जुटा पाते हैं। इसलिए जिसे हम सचमुच में "बाल-साहित्य" कह सकते हैं, वह हम बड़ों को खुशी देने का बहुमूल्य स्रोत है, और अपने और अपने बच्चों के लिए पुस्तकों का चयन करते समय इस बात को हमें हरगिज़ नहीं भूलना चाहिए।
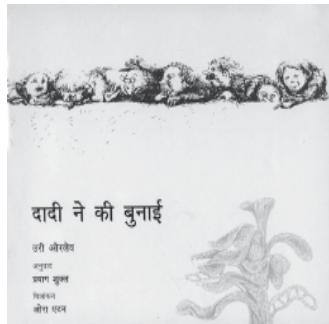
दूसरी बात यह है कि "बाल-साहित्य" साहित्य के इतिहास में अभी अपेक्षाकृत नई विधा है। विश्व-भर की लोककथाएँ, मिथक, महाकाव्य, दुनिया-भर में गाई जाने वाली लोरियाँ, टप्पे, दोहे, चौपाइयाँ – ये सब पहले बड़ों के साथ-साथ बच्चों के लिए भी "साहित्य" थीं, सिरजने की प्रेरणा देती थीं, ढाढ़स बँधाती थीं, जीने और मरने की शक्ति देती थीं। इस सबके बीच सृष्टि और विनाश के मिथक जो जातीय और सामुदायिक जीवन में रचे-बसे हैं, उनका भी सहारा मनुष्य को कम नहीं था। वे घनघोर नैराश्य से उसे बचा ले जाते थे। जो अस्तित्व में है, वह नश्वर है, कभी प्रकृति तो कभी मनुष्य की अपनी प्रकृति ही उसे नष्ट कर देती है – लोक की सहज बुद्धि में ये आम बातें थीं। वे कृतियाँ जो इस सहज बुद्धि से उत्प्रेरित हैं उन्हें यदि हम देखें तो निश्चित ही कुछ अद्भुत किताबें हमारे सामने आएँगी। और *दादी ने की बुनाई* उन बहुमूल्य किताबों में से एक है।

मूल रूप से हिब्रू भाषा में लिखी गई यह कहानी उस दादी की है जो अपने झोले में एक छड़ी, दो सलाइयाँ और ऊन का एक गोला लिए शहर चली आती है। रहने की

जगह नहीं है और उसके पाँव चल-चलकर सूज जाते हैं, और इसी थकान-भरी सूजन से एक सृष्टि की शुरुआत कर लेती है दादी। पहले वह अपने लिए चप्पलें बुनती है, फिर उन्हें रखने के लिए टाट, बाद में अपने रहने के लिए एक पलंग और बिस्तर। करते-करते ऊन का घर, परदे, चाय की तीन प्यालियाँ, और अन्त में अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए ऊन का एक पोता और एक पोती। ऊन के बुने इन विचित्र रूप से चतुर बच्चों को स्कूल दाखिला देने से मना कर देता है। नगर-पालिका भी चकित है — भला कौन ऊन के बुने हुए बच्चों को स्कूल में पढ़ने की अनुमति देगा! लेकिन जिस दादी ने बच्चों के लिए न केवल फूल, झूले और बस्ते ही बुने हैं, बल्कि उन्हें सुलाने के लिए रात का अँधेरा और मधुर सुकोमल स्वप्न भी बुने हैं, वह कैसे हार जाएगी। कहानी के अन्त में दादी भीषण गुस्से में एक-एक कर अपनी रची हुई सृष्टि पूरी की पूरी उधेड़ डालती है। लेकिन वह इसी संसार में कोई और जगह ढूँढ़ेगी, नया घर बसाएगी, नए बच्चे बुनेगी और समय के अन्त तक बुनती चली जाएगी।

किसी भी कसौटी से यह किताब उत्कृष्ट साहित्य की श्रेणी में ही रखी जानी चाहिए। इस किताब का अँग्रेज़ी अनुवाद *Granny Knits* एकदम त्रुटि-रहित छन्द में अनूदित है, जिसमें भर्ती के कोई शब्द नहीं हैं। ऐसा नहीं लगता कि तुक मिलाने के लिए मूल हिब्रू से कोई ज़्यादा छेड़-छाड़ की गई होगी। हो सकता है कि अँग्रेज़ी अनुवादक ने इसे अँग्रेज़ी में मूल रचना की ही प्रेरणा से पुनः रचा हो, क्योंकि अँग्रेज़ी को पढ़ने से मूल जैसा ही आनन्द प्राप्त होता है। हिन्दी अनुवाद जाने-माने हिन्दी कवि प्रयाग शुक्ल ने किया है। बच्चों के लिए उनकी लिखी हुई कई अद्‌भुत कविताएँ हैं जिन्हें वाकई बड़े भी भूल नहीं पाते। लेकिन अगर उन्होंने इस कहानी का अनुवाद छन्द में न किया होता, जो कि अँग्रेज़ी से करना लगभग असम्भव जान पड़ता है, तो शायद बेहतर होता। यह कृति अच्छे, सधे हुए गद्य में भी उतनी ही अच्छी लगती, जितनी कि वह अँग्रेज़ी में अपने छन्द-बद्ध रूप में लगती है। इसे समीक्षक का आग्रह कह लीजिए कि हो सके तो अँग्रेज़ी और हिन्दी दोनों ही अनुवाद ज़रूर पढ़िए ताकि आपको मूल रचना का पूरा मज़ा मिल सके। यह मानकर कि आप यह करने की कोशिश करेंगे, अब हम इस विचित्र कहानी में प्रविष्ट होते हैं।

यह कहानी कई मायनों में विशिष्ट है। इसे पढ़ते हुए सृष्टि के सृजन के कई मिथक हमें एक साथ स्मरण हो आते हैं। सृष्टि की रचना से पहले क्या था जिससे यह सब रचा गया है – शब्द था, अन्धकार था, नाभि-कमल था, जल था, बड़ा-सा कोई अण्डा था; या फिर थकान थी, ऊब थी, अकेलापन था? दादी के संसार की रचना तब होती है जब उसे अपने थके हुए पैरों के लिए चप्पलों की ज़रूरत महसूस होती

है। हम अकेले हैं, थके हुए हैं, इसलिए हम घर-संसार की रचना भी करते हैं, सो दादी भी करती है। वह घर-संसार ऊन से बुना गया है, और इसलिए वह और भी अर्थपूर्ण है क्योंकि वह हमें कला-कर्म की अनुभूति भी कराता है, मानो हम शब्दों की सामग्री से ही संसार की रचना कर रहे हों। यह ऊन का बना हुआ घर विचित्र व्यंजना पैदा करता है – एक बेघर बूढ़े व्यक्ति की कल्पनाशीलता और उसका जीवट। अपना मन लगाने के लिए यों भी घरेलू महिलाएँ (और कुछ घरेलू पुरुष भी) कढ़ाई-बुनाई की विविध गतिविधियाँ करती रहती हैं। कुछ पढ़-लिख गए लोगों को यह काम हास्यास्पद जान पड़ता है, लेकिन यह काम पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही कला की और सौन्दर्य-दृष्टि की ऐसी मिसाल है जिस पर ज़रूर कुछ अलग से सोचने की ज़रूरत है। "टाइम-पास" (जिसकी हाँक मूँगफली बेचने वाले भी लगाते हैं) दरअसल एकदम निरापद ढंग से समय गुज़ारने की एक ऐसी युक्ति है जिससे दुनिया में कोई बिगाड़ पैदा नहीं होता। पुरानी चीज़ों को नए उपयोग में लाने की धुन में स्वेटरों को नए सिरे से फिर बुन लिया जाता है। दादी भी इसी तरह अपनी दुनिया की रचना करती है – चप्पलों से शुरुआत करके बगीचे के फूल, पलंग, लैम्प-शेड, चाय, पोता और पोती, रात का अँधेरा और फिर मकड़ी के जालों से भी महीन और सुकोमल सपनों को भी दादी बुनती है।

पोता और पोती ऊन के हैं, लेकिन उनमें सुख-दुख और शैतानी वैसी ही है जैसी बच्चों में। वे कुछ-कुछ उदास भी हैं – वे प्लास्टिक के बने हुए गुड्डे नहीं हैं जो केवल मुस्कराते हैं। ऊन का तत्व ही उनकी नश्वरता को भी इंगित करता है और हाथापाई में ऊन की बनी लड़की अपने भाई को उधेड़ डालती है। दादी उधड़े हुए बच्चे का पिछवाड़ा फिर से बुन देती है, एक मिथकीय कर्म जो हमारे रोज़मर्रा के जीवन में बराबर झलकता है।

दादी ने की बुनाई

- लेखक - उरी ओरलोव
- अनुवाद - प्रयाग शुक्ल
- चित्रांकन - ओरा एटन
- साज-सज्जा - श्वेत-श्याम
- पृष्ठ संख्या - 44
- मूल्य - 16 रुपए
- प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

कहानी में मोड़ तब आता है जब लाख मनाने के बाद भी स्कूल के शिक्षक ऊनी बच्चों को दाखिला नहीं देते। अभी तक सृष्टि-सृजन के मिथकीय धरातल पर चलने वाला कथानक अचानक स्कूली शिक्षा और राजनीति पर ज़ोरदार कटाक्ष करने लगता है। कोई स्कूल भला ऊन के बुने बच्चों को कैसे ले सकता है? (अब आप स्वयं "ऊनी" विशेषण के जो भी अर्थ गुन सकते हैं, वे आपको इस कथा की गहराई में लिए चले जाएँगे।) नगरपालिका के सदस्यों को भी ऊन के बुने बच्चों का स्कूल जाना गवारा नहीं है। दादी उन बेकार लोगों तक पहुँचने के लिए एक टेढ़ी-मेढ़ी ऊनी कार बुनती है, फिर राष्ट्रपति तक पहुँचने के लिए ऊनी हेलिकॉप्टर। यानी सर्जनात्मक ऊर्जा से सराबोर कोई एक मिथक, कोई एक अद्भुत कथानक आधुनिक जीवन के दुःस्वप्न में आकर फँस गया है। उससे बाहर निकलने के लिए उसे एक बार फिर अपनी रची-रचाई दुनिया को उधेड़ देना होगा। ऊन का कुछ नहीं बिगड़ेगा, न सलाइयों का, न दादी के झोले का। उन सपनों का कुछ नहीं बिगड़ेगा जिन्हें फिर से बुनने का हौसला दादी में अन्त तक रहेगा। वह पोता और पोती को बुनने से पहले भी दादी थी, भले ही उसका कोई पुत्र न हो। उन्हें उधेड़ देने के बाद भी वह गुस्सैल, स्वाभिमानी दादी फिर से एक नई दुनिया को बुनेगी जिसमें उसके लाड़ले बच्चे अपने सभी सपनों को जी सकते हैं, भले ही वे ऊन के बुने हुए क्यों न हों।

किताब के अन्त में बड़ी-बड़ी इमारतों के सामने से शहर को छोड़ती हुई दादी सूनी सड़क पर चल रही है। उसके हाथ में उसका झोला और छड़ी है। वह फन्दा-फन्दा कर अपनी कलाकृति के हर अंश को उधेड़ चुकी है। "ए दिल मुझे ऐसी जगह ले चल" जैसा कोई अमिट और अदम्य भाव उसके मन में उमग रहा है। अब हम भी दादी के साथ कोई सपना बुन सकते हैं, ऐसा सपना जिसमें हर बच्चा अपने विशिष्ट गुणों के अनुकूल माहौल में बड़ा हो सके... और जिसमें हममें से कोई भी अपने अकेलेपन और थकान को नैराश्य में डूबने नहीं देगा।

इस तरह यह किताब हमारे मन के कई तार अनजाने में ही छेड़ देती है, हालाँकि कहने को यह "बाल-साहित्य" है।

इस किताब में बने काले-सफेद चित्रों में हर रेशा और फन्दा अपनी कहानी साफ-साफ कहता है। स्कूल के शिक्षक जो बुने हुए नहीं हैं, बुने हुए पोते के सामने एकदम स्थूल और फिसड्डी जान पड़ते हैं... शायद उनमें ऊन के तत्व की कमी है। उन्हें भी कोई ऊनी ख्वाब देखने की ज़रूरत है। फिलहाल इस किताब के चित्र भी किसी सुखद स्वप्न से कम नहीं हैं – हमारी उस दुनिया में जिसके कई हिस्सों में "दादी" और "बुनाई" की आत्मीय छवियाँ तक मिटती चली जा रही हैं।

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। इन साधनों का किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका **चकमक** के अलावा **स्त्रोत** (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा **शैक्षणिक संदर्भ** (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।